सो बूझे जिस आप बुझाए
भाग - उ तों इ

(निहकलंक हरि शब्द भंडार चों)

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

उठ जीव जाग : उठ जीव जाग जाग जाग, प्रगटे पारब्रह्म अचुत। उठ जीव जाग जाग जाग, प्रभ मिलणे दी आई रुत्त । उठ जीव जाग जाग जाग, साचा नाता प्रभ जिउँ पिता पुत्त। उठ जीव जाग जाग जाग, झूठा संसार अन्त होए ना मित। उठ जीव जाग जाग जाग, कलिजुग चल्लया विछड़ जाए ना कित। उठ जीव जाग जाग जाग, ईशर प्रगटे ना किसे वार ना थित। उठ जीव जाग जाग जाग, कर दरस महाराज शेर सिँघ आत्म नित। (२६ चेत २००८ बि)

उठ जीव जाग, क्यों वक्त विहाया। उठ जीव जाग, वेला प्रभ मिलण दा आया। उठ जीव जाग, प्रभ चार कुण्ट अगन जोत जलाया। उठ जीव जाग, बेमुखां हाहाकार मचाया। उठ जीव जाग, क्यों जगत शरमाया। उठ जीव जाग, प्रभ लाहे कलिजुग माया। उठ जीव जाग, वेला अन्त अन्त दा आया। उठ जीव जाग, थिर घर वासी विच्च मात दे आया। उठ जीव जाग, प्रभ पड़ शरनाया। उठ जीव जाग, रैण सौं के वक्त लंघाया। उठ जीव जाग, जुग चौथे निहकलंक जग आया। उठ जीव जाग, क्यों सोए भाग आपणा आप भुलाया। उठ जीव जाग, निहकलंक हत्थ पकड़ी सृष्ट वाग, क्यों साचा प्रभ भुलाया। उठ गुरमुख जाग, प्रभ साचा शब्द सुणावे राग, बेमुखां कलिजुग सुआया। उठ जीव जाग, सुण शब्द अहिलाद, प्रभ कलिजुग नाद वजाया। उठ जीव जाग, वेख की वरते ब्रह्माद, प्रभ तीन लोक उलटाया। मिटे जन्म बिआध, महाराज शेर सिँघ निहकलंक दर आया।(६ सावण २००८ बि)

उच्चा घर : हरिजन खेड़ा उच्चा घर, महल्ल अट्टल वखाईआ। सतिगुर पूरा अंदर वड़, दिस किसे ना आईआ। आपणे पौड़े गिआ चढ़, काया मन्दर अंदर आप लगाईआ। ना

कोई सीस ना कोई धड़, साची सेजा रिहा हंढाईआ। आपणी विद्या निशअक्खर आपे पढ़, गुरमुख साची करे पढ़ाईआ। जिस फड़ाया आपणा लड़, दो जहानी पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे लए जगाईआ। (८ जेठ २०१७) बि (दसम दवार)

उच्चा टिल्ला : प्रगट होया माझे देस, सम्बल नगरी साचा वेस, गौड़ ब्रह्मण सुत उपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, बजर कपाटी उच्चा टिल्ला, शब्द पहाड़ी दिसे किल्ला, प्रगट होए दरस दिखाइंदा। (१७ हाढ़ २०१३ बि)
कलिजुग वेले अन्तम बौहड़ा, वेखे परखे मिट्ठा कौड़ा, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा, वेद व्यासा गिआ लिखाईआ। सम्बल नगर साढ्ठे तिन्न हत्थ लंमा चौड़ा, उच्चा पर्बत उच्चा टिल्ला बजर कपाटी लाए सिल्ला, अंदर मन्दर बन्द कराईआ। (१ सावण २०१३ बि)

उलटी नाभ कँवल : प्रभ उलटी करे नाभ कँवल, उपजे आत्म ब्रह्म ज्ञान।(१ सावण २०१३ बि)

दे के दरस अपार, देह का कुफ़ल खुल्लाया। होया जोत प्रकाश, अमृत नाम रस पाया। झिरना झिरे आप, बूंद अमृत मेरा बरसाया। अमृत बूंद आप प्रभ बरखे, कँवल नाभ दा मुख खुल्लाया। खुल्ले कँवल बूंद इक्क बरसे, दवार दसवां प्रभ पर्दा लाहिआ। गुरसिखां जगत बलिहार, जोत सरूप प्रभ दर्शन पाया। महाराज शेर सिँघ आप निराधार, गुरसिखां दे विच्च समाया। (१ कत्तक २००७ बि)

उत्भुज : वसणहारा लक्ख चुरासी जीव जंत, अंडज जेरज उत्भुज सेतज रिहा समाईआ। १८ हाढ़ २०२१ बि
तेरा परवेश चारे खाणी, अंडज जेरज उत्भुज सेतज सोभा पाईआ। १ सावण २०२१ बि (चार खाणीआं विच्चों इक्क - वनसपति, बेल बूटे खेती आदि)

उदर : असीं मुड़ मुड़ आए नहीं मां दे उदर, अगनी तत्त ना कोई तपाईआ। (११ हाढ़ श सं ५)
गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत दे के नाम अधारा, उदर दा लेखा दए मुकाईआ। (२६ पोह श सं ६) (पेट, गरभ)

उदे असतु : दो जहानां खेल खिला लिआ, लेखा जाणे उदे असतु। (२७ चेत श सं ४) जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी जो करनेहारा इंतज़ाम, बन्दोबस्त उदे असत जुग चौकड़ी आपणे हत्थ रखाईआ। (२१ कत्तक श सं ११)
(चढ़दे तों लहिदे तक, सूरज दा चढ़ना ते छिपणा)

उलमा : जिस दी कलमयां तों बाहर कलाम, कायनात विच्च जानणा नहीं आसान, आलम उलमा भेव कोई ना पाइंदा। (१६ चेत श सं १)
कूड़ी क्रिया रहे ना कोई अलामत, इलम दे आलम उलमा गुरमुख दए बणाईआ। (१५ भादरों श सं २)
तेरा कलमा कोई ना मन्नदा, आलम उलमा समझ कोई ना पाईआ । (२६ अस्सू श सं २) (विदवान)

ओअं : ओअं आप जोत आकारा। ओअं आप सदा निराधारा। ओअं आप सदा निराहारा। ओअं आप नैण मुंधारा। ओअं आप जोत निरँकारा। ..... ओअं आप महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जोत सरूप खेल रचाई। (१५ चेत २००६ बि)
ओअं आप प्रभ दातार। (८ फग्गण २००६ बि)
सोहँ ओअं मेरा नाउँ। (१५ मध्घर २००६ बि)

ओट : गुरचरन सिख रक्खे ओट। अन्तकाल जम खाए ना चोट। (१ चेत २००८ बि)
कलिजुग ओट एक प्रभ, ना कोई सुहेला। अन्तकाल छड्ड जाणे सभ, झूठी सृष्ट जग झूठा मेला। (२७ चेत २००८ बि)
सर्ब सृष्ट माई बाप, निहकलंक चरन ओट रखवाईए। (१ माघ २००८) (आसरा, पनाह)

ओत पोत : तेरा हुक्म संदेशा तेरा फ़रमाण तेरा नाम शब्द कलमा एहो तेरा ओत पोत, जगत पुत्त पोतरे कम्म किसे ना आईआ। (१३ कत्तक श सं ८)
विष्न ब्रह्मा शिव जिस दा ओत पोत, लक्ख चुरासी खेल कराइंदा । घड़न भन्नण दा जिस नूं शौक, जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा । (१२ जेठ २०२० बि)
जिस दा बंस सरबंस हँ ब्रह्म ओत पोत, सो पुरख पुरखोतम वेख वखाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोई रखाईआ। (१२ अस्सू २०२० बि)
सम्बल सच्चा डेरा लावांगा। शब्द चोट नगारे इक्क लगावांगा। ना कोई वरन ना कोई गोत, दीन मज़हब विच्च किसे ना आवांगा। ना कोई पुत्त कहे ना पोतरा ना कोई ओत पोत, जोती धार चमकावांगा । गोबिन्द तेरा पूरा कर के शौक, शहनशाह तेरा खेल वखावांगा। (३ विसाख २०२१ बि)

ओम : जुग जुग नाउँ हरि निरँकार, आपणा नाउँ रखाया। ओम रूप विच्च संसार, सो पुरख निरञ्जण वेस वटाया। (११ हाढ़ २०१६ बि)

असव : चिट्टे असव करे असवारी। निहकलंक जोत निरँकारी। (१ सावण २००६ बि)
शब्द सरूपी असव असवार। पवण सरूपी शब्द हुलार। (१ माघ २००६ बि)
शब्द घोड़े असव चढ़ के राकी, रहबर हो के वेखे थाउँ थाईंआ। (१४ कत्तक श सं ७) (कोई वस्तू जिस उप्पर असवार होईए)

असुर : पी अमृत बूंद जीव होए असुर सुर। (२४ चेत २००८ बि)
द्वापर कृष्न मुरार, सांवल सुंदर प्रभ रूप वटा ली। हरि जू असुर सँघार, भगत जनां पैज रखा ली। (१ विसाख २००८ बि)
बाहरवां जामा आख सुणाए। मोहणी रूप हरि वटाए। सुर असुर वक्ख वक्ख कराए। (५ जेठ २०११बि) (कुकर्म करन वाला)

अकल कहे : अकल कहे जन भगतो सुणो मेरा ब्यान, अकलां वालयो तुहानूं दिआं समझाईआ। जे मैनूं समझ के वडी जहान, आपणा माण ताण बणाईआ। माया कर परवान, धनाढ रूप वटाईआ । सोहणा पकवा के खाण, बिसतर सेज हंढाईआ। महल अटल मकान, झरोखे नज़री आईआ। सेवक दरवेश दरबान, बैठे सेव कमाईआ । उच्चे सुच्चे बण के इन्सान, जगत रंग विच्च समाईआ। वडे वडे बण के चतुर सुघड़ सुजाण, सुचज्जे रूप वटाईआ। शास्त्र सिमरत पढ़ के वेद पुरान, गीता ज्ञान ढोले गाईआ। अकल कहे मैं आपणी अकल नाल अजे तक नहीं लम्भया भगवान, अगे हो ना दर्शन पाईआ। मैनूं जदों मिल्या शरअ दा शैतान, शरीअत विच्च देवे फसाईआ। जे मुहब्बत करे ते बण के हराम, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हलकाईआ। मेरा किसे कम्म नहीं आया काम, निकम्मी आपणा हाल सुणाईआ। जन भगतो मेरी बेनन्ती इक्को मन्न के प्रभ दा चरन करो ध्यान, नेत्र नैण राह तकाईआ। जे उह किरपा कर के तुहानूं आ मिले भगवान, ओथे अकल कहे मेरी लोड़ रहे ना राईआ। भुल ना जाओ बण अंञाण, सुर धुर संदेशे रही सुणाईआ। मेरे आवाज़ पई इक्क कान, कन्नों फड़ के मैनूं दित्ता हिलाईआ। मैं हो गई हैरान, चारे कुण्टां अक्ख खुल्ह़ाईआ। मैनूं दिस पिआ इक्क निशान, जो भगतां दवारे लहर लहराईआ। ओस किहा तैनूं नहीं पहचान, आ तैनूं दिआं दृढ़ाईआ। आह वेख भगतां दा भगवान, जो मूर्खां मुगधां अनपढ़ां पार लंघाईआ । गुरमुखो मैं वी चरनी डिग्गी आण, आपणा आप रही मिटाईआ। ना कोई माण ना कोई अभिमान, इक्को मंगाँ सच्चा दान, झोली अड्ड के नेत्र नीर वहाईआ। जे तूं भगतां दा भगवान, मैनूं कर ला परवान, तेरे भगतां नूं आई कुछ सुणान, सुनेहड़ा दे के तेरे चरनां विच्च डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दाता दानी मेहरवान, महिमान सारे आपणे घर बहाईआ। (११ चेत शहनशाही सम्मत १)

अकाल मूरत : अकाल मूरत जिस किसे ना खौ। (७ भादरों २००६ बि) अकाल मूरत ना मरे ना जाया। (८ फग्गण २००६ बि)

अकाल मूरत ना रूप ना रेखिआ। (५ चेत २००७ बि)
महाराज शेर सिँघ अकाल मूरत, जो किछ वरते आप करे कराया । (१७ हाढ़ २००८ बि)

अकाल दयाल : जोत अकाल दयाल गोपाल। (५ अस्सू २०११ बि)
हरि शब्द अकाल दयाल जणाईआ। दयाल शब्द गुर गोपाल, गुर मंत्र बणत बणाईआ। गुर मंत्र प्रितपाल, वक्खर अक्खर भेव खुल्ह़ाईआ। (१७ चेत २०१३ बि)

निरगुण निरवैर पुरख अकाल, अकल कलधारी खेल खलाईआ। रूप धर अकाल दयाल, मेहरवान नज़र इक्क उठाईआ। (२३ अस्सू २०२० बि)

सच्चा अखण्ड पाठ : तेरा नाउँ सच्चा सच्चा अखण्ड पाठ, कीरतन तेरा रहे जस गाईआ। (१० अस्सू २०२० बि)

अज्पाजाप : अन्तर आत्म दस्से जाप, अज्पा जाप करे पढ़ाईआ। (३ कत्तक २०२१ बि) सदी चौधवीं कहे अज्पा जाप उह गुरमुख जपदा, जिस नूं जगजीवण दाता दए वडयाईआ। जगत दवारे मंज़ल टप्पदा, सुखमन टेडी बंक ईड़ा पिंगल पैरां हेठ दबाईआ। प्यार छड्ड के निझ अमृत रस दा, कँवल नाभी मुख भवाईआ। सुण आवाज़ अगम्मे नद दा, शब्दी धुन धुन वडयाईआ । दे प्रकाश नूरी सति दा, सति सति विच्च समाईआ। नाता तोड़ के पंज तत्त दा, सुरती अकाल मूरती आपणे रंग रंगाईआ। जिउँ भावे तिउँ रक्खदा, बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। ओथे इशारा नहीं कोई अक्ख दा, नेत्र अक्ख ना कोई उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, सच दवारा इक्को इक्क सुहाईआ। (२७ मध्घर श सं ४)

सतिजुग कहे प्रभू की भगतां रंग, सच हुलीआ दे समझाईआ। पुरख अबिनाशी कहे उहनां दे अंदर इक्क अनन्द, जिस दा रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। इक्को दर्शन मेरा रहे मंग, दूजी ओट ना कोई तकाईआ। कदे ना नहावण जाण तीर्थ तट्ट गंग, घर इक्को सरोवर नहा नहा खुशी मनाईआ। इक्को ढोला गावण छन्द, तूं मेरा मैं तेरा धुर दी करन पढ़ाईआ। उच्ची कूक ना पावण डण्ड, अजपा जाप दित्ता सिखाईआ। काया मन्दर अंदर साची वस्त करके बन्द, जन भगतां हत्थ फड़ाईआ । कोई दस्स ना सके बत्ती दन्द, बन्दना इक्को दिती जणाईआ। उहनां दे दवारे जावीं लंघ, सतिजुग आपणा सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा पड़दा दए उठाईआ। (१६ मध्घर २०२१ बि) (केवल चितर्विती दवारा कीता जाप, (रसना स्वास आदि दी सहायता तों बिना)

अजापजाप : गुर मंत्र कर प्यार मात पसारया। जपया जाप अजाप जप गुरू गुर जाप, गुर मंत्र भेव नयारया। जाणे जणाए आपे आप, अक्खर वक्खर इक्क सिखा रिहा। जोती जामा शब्द परताप, पाप पुंन ना कोई वखा रिहा। (१२ भादरों २०१२)
आपे देवे दरस अमोघ, अमृत सर घर साचे दया कमा रिहा। शब्द चुगावे साची चोग, काग हँस आप बणा रिहा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ जाप अजापा आप अजापा जाप रिहा । (१ कत्तक २०१२ बि)
(जो जाप विच्च नहीं आ सकदा, उस करतार दा जाप)

अजल : सभ दे सिर ते कूके अज़ल, उज़र अग्गे ना कोई जणाइंदा । (२८ पोह २०१६ बि) सभ दे सिर ते कूकदी अज़ल, लोकमात सके ना कोई बचाईआ। (२६ पोह २०२० बि)

मेरे नाल रली मौत राणी अज़ल, दर दर घर घर वेख वखाईआ। (१० माघ २०२० बि)
गोबिन्द शब्द कदे ना आए अज़ल, आदि अन्त ना कोई मिटाया। (६ भादरग२०२१ बि)
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि संगत खुशीआं बख्शे आज, अग्गे अज़ल तों आप बचाइंदा। (२२ फग्गण श सं १) (नियत समां, मौत,)

अजूनी : सो साहिब सुल्तान श्री भगवान कल कलकी लए अवतारा, निरगुण निरवैर निराकार अजूनी रहित जोती जोत वेस वटाइंदा। जिस दा सम्बल धाम नयारा, जोती दीपक इक्क उजिआरा, पवण दए ना कोई हुलारा, महल्ल अट्टल नज़र किसे ना आइंदा। (२० सावण २०२१ बि)
सो निरगुण निरवैर निराकार अजूनी रहित भगवान, जन भगतां होए सहाईआ। (५ भादरों २०२१ बि)
काइआं माटी जून अजूनी सभ दा बदलदा रहे पोश, पशू परेत चारे खाणी अंडज जेरज उत्भुज सेतज दए दुहाईआ। (३ सावण श सं २)
आवण जावण लक्ख चुरासी किसे ना जावे छुट्ट, जून अजूनी पन्ध ना कोई मुकाईआ। (१४ माघ शसं ४) (जो योनी विच्च नहीं आउदा, जन्म रहित)

अठसठ : अठसठ तीर्थ गुर के चरन, दूजा तट्ट ना कोई वखाईआ । (११ हाढ़ २०१६ बि) (सर्ब तीर्थ असथान, अठ्ठ अते सट्ठ अठासठ)

अठदस : रिधी सिधी की विचारी, गुरमुखां कम्म किसे ना आईआ। जिन्नां मिले जोत नरायण नर निरँकारी, एथे ओथे होए सहाईआ। (१३ मध्घर २०१६ बि)
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, रिधी सिधी जन भगतां दासी रूप वखाइंदा। रिधी सिधी होए दासी, बण दासी सेव कमाईआ।(१३ मध्घर २०१६ बि)

वीह सौ वीह वेखे वसाख, वदी सुदी ना कोई जणाइंदा। पिछली सभ दी खोहवे दात, आपणी झोली आप भराइंदा। किसे कोल ना रहे कोई करामात, रिधी सिधी हत्थ ना किसे फड़ाइंदा। नानक गोबिन्द लिख के गिआ कलम दवात, कलिजुग अन्त श्री भगवन्त निहकलंक कल कलकी आपणा वेस वटाइंदा। इक्को नाम इक्को मंत, इक्को जीव इक्को जंत, इक्को साध इक्को सन्त, इक्को नार इक्को कन्त, इक्को महिमा इक्को अगणत, इक्क बणावणहार बणत, इक्क मणीआं इक्क मंत, इक्क भगत इक्क भगवन्त, भगवन आपणी कार कमाईआ। इक्क राजा इक्क राज, इक्क कर्म इक्क काज, इक्क धर्म इक्क साज, इक्क ग़रीब इक्क निवाज, इक्क करीब इक्क दूर दुराडा रिहा भाज, प्रभ का खेल अजीब कोई समझ ना सके राज़, कोई सजदा कोई निमाज़, कोई बरदा कोई आदाब, कोई सीस जगदीश झुकाईआ । करे खेल आप तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। (३० चेत २०२० बि)

किसे कम्म नहीं ओणीआं रिधीआं सिधीआं, मंत्र जंतर सारे ख़ाक विच्च आपणा आप गवौणगे। बिन पुरख अकाल सतिगुर पूरे लक्ख चुरासी रूहां फिरन रंडीआं, हरि घर कन्त ना कोई मनौणगे। (६ अस्सू २०२० सि)

रिधी सिधी नवें नवें छोटे छोटे चमत्कार, जुगनूंआं वांगू नज़री आईआ। मन मति बुद्धि दा खेल संसार, रुची जगत रचना विच्च लगाईआ। थोड़ी थोड़ी अगनी चंगिआड़ी निकले बाहर, शोहला उड के मुड़ भसम रूप वटाईआ। एह खाण पीण दा अधार, पेट दा शिंगार, तत्त सोभा पाईआ। भगत सन्त एस तों वसण बाहर, जिथ्थे खेल अपार, इक्को मिले सांझा यार, नूर खुदाई परवरदिगार, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूरो नूर नूर उजिआर, बिना सख़ीआं मंगलाचार, बिना अक्खीआं होवे दीदार, दरस दरस विच्च मिलाईआ । निक्के निक्के चमत्कार नहीं एह कूड़ी चमक, चानण सच ना कोई रुशनाईआ । उह धोखा देण वाले अहिमक, आत्म परमात्म जोड़ ना कोई जुड़ाईआ। सच्चे सन्त उहनां दे नाल कदे नहीं हुंदे सहिमत, जिनां साहिब दा दर्शन अंदरे अंदर लैणा पाईआ। श्री भगवान जिनां दे उत्ते करदा रहमत, मेहरवान हो के अक्ख खुलाईआ। उहनां दे मन विकार हँकार दी कोई नहीं रहन्दी ज़हमत, जगत बीमारी दए गवाईआ। हरिजनो जिनां नूं सच इशारे दी वजदी सैनत, समझ विच्चों समझ दिती बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जगत चमक चांदनी ना कोई रुशनाईआ। (७ विसाख श सं १)

अठारां सिधीआं : १) बहुत छोटा हो जाणा। २) वड्डा हो जाणा । ३) भारी हो जाणा। ४) हौला हो जाणा। ५) मनवाछित वस्तू हासल कर लैणी। ६) सभ दे मन दी जाण लैणी। ७) आपणी इच्छा अनुसार सभ नूं प्रेरणा। ८) सभ नूं काबू कर लैणा। ९) भुक्ख तेह दा ना वयापणा। १०) दूरों सभ गल्ल सुण लैणी। ११) दूर दे नज़ारे अक्खां साहमणे वेखणे। १२) मन दी चाल तुल छेती जाणा । १३) जेहा मन चाहे तेहा रूप धारना। १४) दूसरे दी देह विच्च प्रवेश कर जाणा। १५) आपणी इच्छा अनूसार मरना। १६) देवत्यां नाल मिल के मौजां मानणीआं। १७) जो चितावणा सो पूरा हो जाणा। १८) किसे थां जाण विच्च रुकावट ना पैणी।

अगम्म : जोती जोत अगम्म, किसे भेद ना पाया। (१ जेठ २००७ बि)
प्रभ अगम्म अपार, धरत धवल आकाश बणाई। (५ जेठ २००७ बि)
निरञ्जण जोत अगम्म, कोई भेद ना पाए। (१६ हाढ़ २००७ बि)
कोटन कोट रूप खेल करे अगम्म, अलक्ख अगोचर शहनशाहीआ। (२७ पोह २०१७ बि)
शब्द अगम्म महिमा अगणत, लेखा लिखत विच्च कदे ना आईआ। (२७ फग्गण २०१९ बि)
निहकलंक अगम्म अथाहो, लउ दान सिखो खुले दरवाजिआ। १ (माघ २००७ बि)
ऊँच अगम्म अथाह, प्रभ तेरा घर। (२ विसाख २००८ बि)

अथाह : चार जुग प्रभ अगम्म अथाहो। (२९ अस्सू २००७ बि)
ऊँच दरबार अगम्म अथाह। उप्पर बैठा बेपरवाह। (२६ चेत २००८ बि)

शब्द गुरू कहे मैं आदि अन्त, जुग जुग सेव कमाइंदा। प्रभ दी महिंमां दस्सां बेअन्त, अथाह रूप समझाइंदा। (२२ जेठ २०२१ बि) (जिस दा थाह ना पाया जावे)

अदना : मैं अदना ग़रीब निमाणा नीचों नीच, तूं ऊँचो ऊँच अखवाईआ। (२३ फग्गण २०२० बि)
लेखे ला के आहला अदना, इक्को रंग दित्ता रंगाईआ। (२ चेत श सं ६) (नीच, तुछ)

अदल : पारब्रह्म प्रभ करे सच निआं, साचा अदल आप कमाइंदा । (२३ फग्गण २०१७ बि)
थिर घर बैठा साचा राणा, साचा अदल कमाईआ। (६ सावण २०१६ बि)
सतिगुर शब्द हत्थ इन्साफ़, जुग जुग आपणा अदल कमाईआ। (१७ माघ श सं ८)
सतिगुर शब्द कोलों करावे अदल, इन्साफ़ आपणे हत्थ रखवाईआ। (१६ माघ श सं ८)

अदली : पुरख अकाल इक्को अदली, सच अदालत नाम इक्क लगाईआ। (२३ माघ २०२० बि)
अंदर वड़ के काया महल्ले चढ़ के सच सिँघासण बैठ करे अदालत, अदली इक्को नज़री आईआ। (६ पोह २०२० बि) (इन्साफ करन वाला)

अनहद शब्द, नाद : मेरा शब्द जो नर सुणे। अनहद शब्द दी मन में धुने। (१७ मध्घर २००६ बि)
घर विच्च आया सतिगुर पूरा। वजाए गवावे शब्द अनहद तूरा। (१५ मॅघब २००६ बि)
दवार दसवां जां गुरू दिखाया। अनहद शब्द मन वजाया। झूठी देह विच्च सच शब्द सुणाया।
गुरसिखां उप्पर एह कर्म कमाया। (१६ मध्घर २००६ बि)
गुरप्रसादि अनहद राग मन पाईए। (१६ विसाख २००७ बि)
प्रभ देवे ब्रह्म ज्ञान, मन अनहद शब्द वजाइंदा। (२२ जेठ २००७ बि)
गुरसिख सच्चा जाणीए, घर अठ्ठे पहर अनहद शब्द वज्जे मरदंग। (२६ पोह २०१७ बि)
शब्द अनाद अनहद धुन आत्मक राग सुणाए महानी, रागाँ नादां विच्चों बाहर कढाइंदा। (२७ भादरों २०२१ बि)
(उह शब्द जो किसे आघात (प्रहार) तों पैदा नहीं होया। उह शब्द जो दसम दवार विच्च योगी सुणदे हन। आत्म मण्डल दा संगीत, जो कन्ना दा विशा नहीं। चित दी इकागरता विच्च अनुभव करना। प्राप्त होया धुरदरगाही हुक्म।)

अनाथ : नाथ अनाथां आप होए सहाया। (१६ मध्घर २००६ बि)
महाराज शेर सिँघ अनाथां नाथ, शरन पड़े दी लाज रखवाए। (२६ अस्सू २००७ बि)
(जिस दा कोई नाथ (स्वामी) नहीं)

अनाद : गुरपरसाद होए आत्म अनाद, महाराज शेर सिँघ साचा परसाद गुरसिख तेरी भेट चढ़ाया। (१२ विसाख २००८ बि)
आदि पुरख सदा अनाद है, आदि अन्त शाह भूप। (१ मध्घर २०१३ बि)

पंचम शब्द वजाए मरदंग है, नाद अनादी गीत सुणाए। हरि बैठा शब्द रंगीले सच पलंघ है, दसम दवारी डेरा लाए। ऐर गैर ना सके कोई लंघ है, बजर कपाटी कुण्डा लाए। (१६ मध्घर २०१३ बि)

पुरख अकाल कहे मैं वसां सदा उहले, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। मेरा शब्द दुलारा अगम्मी बोले, नाद अनादी धुन करे शनवाईआ। सिफ्ती साचे गाए ढोले, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाहीआ। (२६ जेठ श सं ८)
(आदि रहित, जिस दा मुढ नहीं। करतार। नाद (धुनी) बिना)
अनाम ; सर्ब जीआं दे अन्तरजामी, घट घट वेख विखाईआ। तेरा देश अगम्म अनामी, कहण किछ ना पाईआ। संदेसा तेरा हक़ पैग़ामी, चार जुग दे शास्त्र देण गवाहीआ। तूं मालक इक्क हक़ अनामी, प्रवरदिगार नूर अलाहीआ। तेरा दिसे ना कोई सानी, लासानी तेरी वड वडयाईआ। (१ फग्गण श सं ८)
तूं वसें सच दवार अनामी, दरगाह साची सोभा पाईआ। (१४ सावण श सं ४)
(जिस दा कोई नाम नहीं।)

अनन्त : जिस दा नाम सिफ्ती कोटन कोट अक्खरां विच्च अनन्ता, अन्त कह ना कोई समझाईआ। (१२ भादरों २०२१ बि)
करे खेल आप अनन्त, गिणती गणत ना कोई गणाईआ। (४ अस्सू २०२१ बि)
(बिना अन्त, बेअन्त)

अनन्द : एह उह सच्चा अनन्द सतिगुर पास, दूसर नज़र किते ना आइंदा। गुरसिख गुरमुख गुर गुर हो जा दास, साची सिख्या इक्क समझाइंदा। जन्म कर्म दी मेटे प्यास, तृसना रोग चुकाइंदा। लेखे लाए पवण स्वास, रसना जिह्वा खोज खुजाइंदा। कर किरपा निरगुण जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। काया मन्दर अंदर वखाए रास, गोपी काहन नचाइंदा। दरस दिखाए साख्यात, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। परमात्म आत्म इक्को ज़ात, दूजा रंग ना कोई रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाइंदा।
सच अनन्द सतिगुर रंग, रंग रगीला आप जणाईआ। गुरमुख विरला मंगे मंग, सतिगुर ढह पए सरनाईआ। सतिगुर पूरा सदा बख्शंद, दीनन आपणी दया कमाईआ। निरगुण जोत चाढ़े चन्द, निर्मल प्रकाश कराईआ। कूड़ी क्रिया करे खण्ड खण्ड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहण ना पाईआ। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना दए तुड़ाईआ । घर आत्म परमात्म जणाए इक्क अनन्द, अनन्द अनन्द विच्च समाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ।
सच्चा अनन्द सतिगुर हत्थ, आप आपणे हत्थ रखाइंदा। जन भगतां देवे जुग जुग वथ, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। सति सतिवादी इक्को मत, ब्रह्म मत आप दृढ़ांइंदा। देवणहारा धीरज जत, माया ममता रोग चुकाइंदा। जानणहारा मित गत, घर घर खोज खुजाइंदा।

गुरसिख बंन्हे चरन नत, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। साचा नूर कर प्रगट, प्रगट रूप वखाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म हड्ड मास नाड़ी ना कोई रत्त, चमड़ी चम्म ना कोई दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाइंदा।

सच्चा अनन्द काया मन्दर, घर घर विच्च दए वखाईआ। सतिगुर बंन्हणहारा मन वासना बन्दर, दह दिशां ना उठ उठ धाईआ। तोड़नहारा वजा जंदर, बन्द ताकी कुण्डा लाहीआ। करे प्रकाश डूंघे खण्डर, ज़हूर जलवा इक्क दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा अनन्द इक्क समझाईआ।

साचा अनन्द सतिगुर चरन, चरन चरनोदक आप प्याइंदा। खोल्हणहारा नेत्र हरन फरन, फुरना कूड़ा बन्द वखाइंदा। तारनहारा तरनी तरन, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा। नाता तोड़ वरन बरन, सरन इक्को इक्क जणाइंदा। परमात्मा आत्मा आए फड़न, बण पान्धी फेरा पाइंदा। कलिजुग अन्तम सोहँ ढोला जो जन पढ़न, जगत वछोड़ा आप गवाइंदा। साचे पौड़े घर आपणे चढ़न, मन्दर सच सुहञ्जणा इक्क जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क जणाइंदा।

सच अनन्द सतिगुर वैराग, वैरागी इक्को गुण जणाईआ। सतिगुर धोवे दुरमत दाग़, मैल कोई रहण ना पाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, काग हँस रूप वखाईआ। सुरत सवाणी जाए जाग, माया पर्दा दए उठाईआ। प्रकृती कोई ना देवे साथ, सुरती सुरत सुरत जणाईआ। अन्तर आत्म पारब्रह्म जणाए इक्को गाथ, ब्रह्म मेला सहज सुभाईआ। नाल इशारे चाढ़े आपणे घाट, घाटा पिछला पूर कराईआ । जन्म कर्म दी मेटे वाट, अग्गे राह ना कोई वखाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिलाए ज़ात, अजात रूप ना कोई वटाईआ। इक्क अनन्द वखाए साख्यात, सखी आपणा कन्त मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची दात, जन भगतां झोली रिहा भराईआ।

जिस जन सच्चा अनन्द लैणा, सो पुरख निरञ्जण रिहा जणाईआ। आओ चल के अन्तर आत्म दरस करो नैणां, तीजा नेत्र दए खुल्हाईआ। हरि संगत मिल के नीवां हो के बहणा, निवण सो अक्खर करे पढ़ाईआ। फिर सतिगुर पूरा गुरसिख दा मन्ने कहणा, जो किहा सो पूर कराईआ। तन बसतर भूशन पाओ नाम गैहणा, सालू चुंनी रत्तड़ी रंग वखाईआ। लाड़ी मौत ना खाए डैणा, राए धर्म ना दए सज़ाईआ । अनन्द आत्म अनन्द परमात्म निजानंद निझ घर बह के लैणा, दूजे दर ना मंगण जाईआ। सतिगुर गुरमुख गुरसिख भाणा सहणा, भाणा इक्को हुक्म समझाईआ। कूड़ी क्रिया वहण ना वहणा, भव सागर पार तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म कट विछोड़ा, मेलणहारा जोती जोड़ा, देवणहारा शब्दी घोड़ा, सुरत सवाणी साचे हाणी नाल मिलाईआ।

सच अनन्द निज घर पाओ, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। दूई द्वैती हउमें हंगता रोग मिटाओ, चिन्ता सोग ना कोई जणाइंदा। दिवस रैण जागत सोवत सोहँ ढोला साचा गाओ, गीत गोबिन्द इक्क अलाइंदा। मित्र प्यारा हरि निरँकारा गृह मन्दर आसण सिँघासण सच बहाओ, सेज सुहञ्जणी इक्क वडिआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा।

अनन्द लैण दा जिस जन चाओ, चाओ घनेरा दए जणाईआ। हरि सरनाई लागो पाउं, पाहनी

आपणा रूप वटाईआ। हउमें हंगता माण गवाओ, गुर शब्द वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां जागदिआं सुत्तयां सुत्तयां जागदिआं आत्म परमात्म मेल मिलाईआ।

आत्म परमात्म साचा मेला, हरि बनवारी आप कराइंदा। खेले खेल गुरू गुर चेला, चेला गुर गुर रूप समाइंदा। साहिब सतिगुर सज्जण सुहेला, सद सद आपणे अंग लगाइंदा। परमात्मा खुश ना होवे रह के इकेला, सदा आत्मा तेरा राह तकाइंदा। कलिजुग अन्तम इक्को वेला, वेला गिआ हत्थ ना आइंदा। निरवैर पुरख अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ खेला, ख़ालक ख़लक आप जणाइंदा। कटणहारा धर्म राए दी जेला, बंधन आपणा इक्को पाइंदा। निरगुण सरगुण बण वसीला, वसल बिन वजूद आप कराइंदा। जोती धारों पार हो के आया नीला, नील बसन बनवारी आपणी खेल कराइंदा। साचे जीवण गुरमुख जी लै, बिन सतिगुर जीवण ना कोई बणाइंदा । आदि जुगादि जुगा जुगन्तर भगत भगवान दा सच कबीला, काबल गुरमुख विरला नज़री आइंदा। घर घर दर दर नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लक्ख चुरासी अगनी पंज तत्त लग्गी तीला, सांतक सति ना कोई कराइंदा। परमात्म सदा सदा सद छैल छबीला, आत्म आपणे रंग रंगाइंदा। अनन्द मिले ना नाल दलीलां, गल्लीं बातीं प्रभ जू हत्थ किसे ना आइंदा। सतिगुर शब्द इक्क वकीला, अग्गे ताअतील ना कोई पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म परमात्म इक्को घर वसाइंदा।

आत्म परमात्म इक्को खेड़ा, नगर गराम गृह मिले वडयाईआ। परमात्म आत्म चुक्के बेड़ा, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ । परमात्म आत्म कहे तूं मेरा मैं तेरा, सोहँ रूप वटाईआ। श्री भगवान मिले ना कीत्यां झेड़ा, झगढ़ा सभ दा दए मुकाईआ। आत्म परमात्म करनहारा हक़ नबेड़ा, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। जन भगतां ढाए भरमां डेरा, कूड़ी क्रिया गढ़ तुड़ाईआ। एका रंग वखाए संझ सवेरा, दिवस रैण ना कोई चतराईआ। अनन्द अनन्द विच्च चाउ घनेरा, घनइया शाम मुकन्द मनोहर लखमी नरैण मोहण माधव इक्को नज़री आईआ। सच्चा अनन्द डूंघा सागर, बिन सतिगुर नज़र किसे ना आइंदा। लक्ख चुरासी बणी सौदागर, जीव दर दर अलक्ख जगाइंदा। अन्तर देवे ना कोई आदर, बाहरों गल्लां कथनी कथ सर्ब सुणाइंदा। हरि का नाउँ शब्द बहादर, ज़ोरावर इक्क अखवाइंदा । दर आया घर देवे आदर, आदरश आपणा इक्क जणाइंदा। निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमत मैल धवाइंदा। भाग लगाए काया गागर, काया गगरीआ खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अनन्द इक्को इक्क वखाइंदा।

अनन्द अंदर डूंघा रस, रस रसीआ आप चखाईआ। गुरसिख होवे गुर के वस, गुर वस हो के गुरसिखां अंदर डेरा लाईआ। फिर सच्चा अनन्द देवे दस्स, जिस अनन्द विच्च रिहा समाईआ। ओथे मुख नाल कोई ना सके हस्स, नैणां नाल ना कोई समझाईआ। इशारा करे ना नाल हत्थ, बत्ती दन्द ना कोई वडयाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, धूप दीप हवन ना कोई वखाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, सरोवर रूप ना कोई वटाईआ। जिस आत्म सेजा चढ़िआ पुरख समरथ, तिस घर इक्को अनन्द वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा अनन्द नारी नर आप जणाईआ।

सच्चा अनन्द गुरमुख नारी, आदि जुगादि मंग मंगाईआ। बिन सतिगुर पूरे सदा रहे कवारी,

आत्म सेज ना कोई हंडाईआ। लक्ख चुरासी रही झख मारी, झाकी अन्तर ताकी खोल्ह किसे ना पाईआ। माया ममता आसा तृसना कूड़ बीमारी, कूड़ी क्रिया रही खाईआ। सतिगुर सज्जण मीत मुरारा करे इक्क प्यारी, पीआ प्रीतम वड वडयाईआ। साचा करे तत्त शंगारी, सोलां शंगार माण गवाईआ। प्रेम कज्जल पाए धारी, निज नेत्र नैण मटकाईआ। दोए नैण शरमसारी, अक्ख सके ना कोई उठाईआ। गुर सतिगुर किरपा आपणी धारी, धारना आपणी दए जणाईआ। दोहां विचोला बण निरँकारी, निरगुण फेरा पाईआ। आत्म कहे मैं परमात्म प्यारी, परमात्मा कहे मैं आत्मा इक्क परनाईआ। जिन्हां विच्चों अनन्द अनन्द अनन्द निकले सच खुमारी, खुमार इक्को इक्क रखाईआ। सतिगुर पूरा अनन्द लै के फिरे गुरसिखां पिच्छे अगाड़ी, दास आपणी सेव कमाईआ। जिन्हां चरन छुहाई दाड़ी, दह दिशा वेख वखाईआ । सेवा करे बण वगारी, ऐर ग़ैर नेड़ कोई ना आईआ। बाहरों कोटन कोट लौंदे वेखे यारी अंदर यार ना कोई मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा अनन्द लैण दी जाच रिहा सिखाईआ।

पैहलों सिखों सच्चा चज, सिधी बोली नाल समझाइंदा। गढ़ हँकारी भाण्डा जाए भज्ज, भाजड़ काम क्रोध वखाइंदा। तत्तव तत्त बुझे अग्ग, त्रै पंज डेरा ढाहिंदा। घर विच्च घर सिखाए हज्ज, मक्का काअबा दो दो आबा आब हयात शाह नवाब इक्को जाम प्याइंदा। कलमा कायनात पढ़ाए साख्यात, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इल्लाही नूर इक्क दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तोड़नहारा बजरी सिला, तीर निराला इक्क चलाइंदा। (२७ माघ २०१६ बि)

भइआ अनन्द जां दर्शन पाया। (१५ मध्घर २००६ बि)

खुशी विच्च सारे जी आयां आयां नूं मिले आत्म रस दा अनन्दा, जो अनन्दपुर वाला अनन्द अनन्द विच्चों गिआ जणाईआ। (१७ हाढ़ श सं ८)

ऐड़ा अक्खर एका अक्ख, जिस जन मात खुल्हाईआ। नन्ना निरगुण रूप प्रतक्ख, निज घर वास रखाईआ। दद्दा दाता ना दिसे सख, हरि घट में रिहा समाईआ। (१ जेठ २०१३ बि)

अनन्दपुर : ऐड़ा आकार हरि निरँकार, एका एक वखाया। आप आपणा खेल अपार, आपणे रंग समाया। ननना निरगुण रूप निरँकार, निरवैर अखवाया। आप आपणा कर त्यार, सरगुण रिहा उपजाया। दँदा दो जहानां वस्सया बाहर, लिखण पढ़न विच्च ना आया। पप्पा पुरख हरि सुल्तान, एका शाहो अखवाया। इक्क इकल्लड़ा वेख बाल निधान, चरन जोड़ा छुहाया। रारा रेख ना कोई जहान, ना कोई नज़री आया। ना कोई धारी दिसे केस, ना कोई मूंड मुंडाया। ननना नानक गुर दसमेस हरि जोती सवाया। हरि का रूप पंज तत्त प्रवेश, सो सतिगुर आप बणाया। सो पुरख निरञ्जण करे आदेस, आप आपणा देस रिहा वसाया। पुर अनन्द इक्क नरेश, हरि साचा आप अखवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस दसमेस मेल मिलाया। (१ जेठ २०१४ बि)

अबिगत : अबिगत अगोचर प्रभ आप अखवावे। (१८ जेठ २००७ बि)

धन्न गुरसिख अबिनाशी अबगत अगोचर हर थाएं समाए। (१६ जेठ २००७ बि)

गुर ना बूझया दर ना सूझया। अबगत होए दर दर लूझया। (१५ मघ्घर २००६ बि)
तक्कया पुरख अबिनाश, जो अबगतां पार लंघाईआ। (१६ फग्गण श सं १)
(जो जाणयां ना जा सके। जो नाश ना होवे। बुरी हालात जिस दी गति ना होवे)

अबिनासी करता : आदि अन्त ना कदे विनासे, अबिनाशी करता आप अखवाया। (१४ चेत २०१४ बि) (जिस दा कदे नाश नहीं हुंदा)

अबलीस : कलिजुग कूड़ कुड़िआर फिरे अबलीस, मन ममता नाल मिलाईआ। (७ माघ श सं ६) अबलीस घर घर वड़ना शैतान टूटा, टकोर सभ नूं दए लगाईआ। बिन तेरयां भगतां साबत रहे ना कोई बूटा, बूटी जड़ी दए उखड़ाईआ। (१२ पोह शै सं १)

अमावस : कलिजुग अमावस होया अन्धेरा, साचा चन्द ना कोई चढ़ाइंदा। (२३ जेठ २०१६ बि)
आपे रैण अमावस अन्धेरी चाढ़े चन्द, नूरो नूर आप चमकाइंदा। (१८ हाढ़ २०१६ बि)
(अनेरे पख दी पिछली तिथि। अविद्या)

अमिउ : चरन लाग मिले वड्डिआई, अमृत नाम अंमिउँ रस पीओ । (३ चेत २००८ बि) महाराज शेर सिँघ आत्म अमृत बरस, गुरसिख नाम अमिउँ रस पीआ। (१५ चेत २००८ बि)
जो जन रसना करे जूठा चाटन, तिस अंमिउँ रस ना मुख चवाईआ । (२१ फग्गण २०१७ बि)

अमोघ : गुरचरन प्रीती दरस अमोघ। (२२ माघ २००८ बि)
जोत सरूपी दरस अमोघ दिखाया प्रभ साचे कल। (२३ सावण २००६ बि)
दरस अमोघ आत्म धीरा। (१४ भादरों २००६ बि) दरस अमोघ पाया, आया हरि सरनाई। (१० मॅघब २०१० बि) (जो निशफल ना होवे, खाली ना जाण वाला)

अल्ला राणी : मुहम्मद ख़ाहश अल्ला राणी नार मुटिआर, पंज तत्त ना कोई जणाइंदा। (२६ भादरों २०१६ बि)

आन बाट : वेखणहारा काया माट, पंज तत्त फोल फोलाईआ। मात गरभ आन बाट, उलटा बिरछ सलाहीआ। (२२ चेत २०१६ बि)

आत्मा : आत्मा निरगुण अगम्मी नूर, मैटीरीअल नज़र कोई ना आईआ। तत्तां नाल खेलणा जिस दा दस्तूर, कुदरत दे कादर दित्ता बणाईआ। (२८ अस्सू श सं २)
आत्मा निरगुण रूप निराकार, प्रकाश प्रकाश विच्चों नज़री आईआ। जिस दा मालक इक्क सरदार, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। (२८ अस्सू श सं २)
आत्म कदे ना होवे विनास, मड़ी गोर ना कोई दबाईआ। नूर नूर दा सच प्रकाश, रूहे रवां नज़री आईआ। (२८ अस्सू श सं २)

मिल परमात्म आत्म होई गुरू अवतार, गुर गुर आपणा खेल वरवाइंदा। सच संदेसा दे विच्च संसार, अक्खरी नाम रूप प्रगटाइंदा । (२२ जेठ २०२१ बि)

आत्म कहे परमात्म तेरी पुतरी, घर साचे सोभा पाईआ। निरगुण धार विच्चों उतरी, मात पिता ना कोई बणाईआ। लोकमात आ के होई नाशुकरी, तेरा जस कोई ना गाईआ। माया ममता अंदर रुठड़ी, तेरा नाउँ भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। छोटी पुतरी नैणां रो, नीर नीर वहाईआ। तुध बिन सार ना पावे को, कूक कूक जणाईआ। सच प्रकाश ना दिसे लो, अन्ध अन्धेरा छाईआ। तेरा प्रेम ना मिले ढोआ ढो, साचा रंग ना कोई रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दस्स साची सो, साचे साहिब तेरी सरनाईआ।
मेरी सो सुण एक, सो साहिब आप जणाईआ। नित नवित्त रक्ख टेक, इक्क ध्यान वखाईआ। अन्तर बाहर होएं बिबेक, सति सरूप दरसाईआ। निज नेत्र आत्म परमात्म लएं वेख, घर मेला सहज सुभाईआ। सच प्रीती कर हेत, रीती इक्को इक्क जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेलणहार अखवाईआ।
मेलणहारा हरि भगवन्त, सद सद वेख वखाइंदा । खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग करता वेस वटाइंदा। तेरा मकान दवारा भगत, मन्दर इक्को इक्क सुहाइंदा। जिस गृह खेल करे बेअन्त, बेपरवाह आपणी कार कमाइंदा। परमात्म मिले आत्म कन्त, नर नरायण फेरी पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा।
साची सिख्या सुण कन्न, बेपरवाह आप जणाईआ। आत्म परमात्म कहणा मन्न, मनसा होर ना कोइ रखवाईआ। तेरा नाता कूड़े तन, अन्तम होए जुदाईआ। तेरा लेखा श्री भगवन, सद आपणे हत्थ रखवाईआ। कलिजुग अन्तम बेड़ा बंन, जन भगतां कर कुड़माईआ । मात गरभ फेर ना मिले डंन, काया तत्त ना होर हंढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

आत्म कहे मैं तेरी बाली, बालक रूप सखाईआ। जुग चौगढ़ी घालन घाली, नित नित तेरी सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर रही ख़ाली, मेरी झोली ना किसे भराईआ। मिल्या हक़ ना हक़ हलाली, हकीकत हत्थ ना कोई फड़ाईआ। पत्त रिहा ना किसे डाली, पत्तझड़ इक्को नज़री आईआ। कलिजुग अन्तम होई सवाली, दर तेरे अलख जगाईआ। तूं शाह पातशाह दो जहानां वाली, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। आदि निरञ्जण जोत अकाली, जोत निरञ्जण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला सहज सुभाईआ।
आत्म बच्ची वेख बचपन, सो साहिब आप जणाईआ। आपणा आप कर अरपण, बाकी नज़र किछ ना आईआ। अगली पिछली मिटे धड़कन, दुख दर्द ना लागे राईआ। अद्धविचकार ना रहे अड़चन, पर्दा उहला दए उठाईआ। जगत विकार तैनूं वरजण, घर रोकण थाउँ थाईंआ। साची सिख्या दे के गिआ गुरू गुरदेव अरजण, बिन प्रभ मिलिआं सांत कोई ना आईआ। दीन दयाल प्रभ मर्द मरदन, मरदानगी इक्को इक्क वखाईआ। आपणा पूरा करे फ़र्ज़न, फ़र्ज़ी

कार ना कोई वखाईआ। साचा राग सुणाए तर्ज़न, ताल तलवाड़ा इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा चाईं चाईंआ।

आत्म कहे तेरी भावे रीत, प्रभ पूरी आस कराईआ। नित उठ गावां तेरा गीत, सच मंगाँ इक्क सरनाईआ। ठाकर स्वामी लग्गे प्रीत, प्रीतीवान इक्को नज़री आईआ। लेखा चुके मन्दर मसीत, मस्तक टिक्का धूढ़ी तेरे लाईआ। तेरा खेल हस्त कीट, घट घट तेरा नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद तेरी रहां सरनाईआ।

परमात्म कहे सुण आत्म भोली, भोले भाउ समझाइंदा। सच दवार बण गोली, सेवा इक्को इक्क लगाइंदा। जगत विकार ना पा रौली, झगढ़ा झेड़ा सर्ब मिटाइंदा। मेल मिलाए हौली हौली, हौला भार सर्ब वखाइंदा। जन भगतां नाल मिल के प्रभ साचे दी समझ लै बोली, जो सोहँ राग सुणाइंदा। अन्तम चाढ़े आपणी डोली, कहार नज़र कोई ना आइंदा। नेत्र नीर ना कोई वरोली, अत्थर सत्थर ना कोई विछाइंदा। सच सरनाई घोल घोलीं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क जणाइंदा।

आत्म कहे मैं निक्की नढी, सुध कोई ना आईआ। पारब्रह्म प्रभ कर किरपा काया विच्चों कढ्ढी, आप आपणा मेल मिलाईआ। कलिजुग अन्त ना पिच्छे छड्डीं, खैहड़ा छुट्टे सर्ब लोकाईआ। प्रेम तेरे दे अंदर बध्धी, बन्दना दोए जोड़ करां सरनाईआ। बीतदी जाए गुर अवतारां सदी, सद्दा आपणा नाम दवाईआ। मेरी ना पुशत ना कोई यद्दी, सद तेरी तेरी अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

आत्म सुण सच समझावां, हरि साचा सच जणाइंदा। जन भगतां अंदर तैनूं बहावां, तेरा मेल मिलाइंदा। सर सरोवर इक्क नुहावां, चरन धूढ़ी ताल वखाइंदा। फड़ उठावां भुजां बांहवां, बल इक्को इक्क धराइंदा। समरथ हो के देवां छाँवां, सिर आपणा हत्थ रखाइंदा। वस्त अमोलक झोली पावां, भिच्छया इक्को नाम वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर तेरे हत्थ टिकाइंदा ।

आत्म कहे भगतां अंदर, वड़ आपणी सेव कमाईआ। प्रभ जू तेरा सोहणा लग्गे मन्दर, जिस घर आपणा फेरा पाईआ। लेखा जाणे डूंघी कंदर, कन्ढा पार ना कोई रखाईआ। किरपा करे सदा छिन भंगर, शहनशाह तेरी चतुराईआ। मैं की जाणां नेत्र अन्धड़, तेरा प्रकाश सदा सुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सगला संग दे समझाईआ।

सगला संग वेख भगत, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। जिन्हां लेखे लग्गे बूंद रकत, रत्ती रत्त लेखे पाइंदा। तिन्हां कोल आए परत, पतिपरमेश्वर फेरा पाइंदा। आवण जावण चुकाए हरख, सोग जन्म ना कोई वखाइंदा। कलिजुग अन्तम करे तरस, बेतरस फेरा पाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दर इक्क सुहाइंदा।

भगतां नाल जोड़ी जोड़, जगत जुगत दए वडयाईआ। आत्म परमात्म नाल लए तोर, तुरत आपणा हुक्म वरताईआ। तिस अग्गे चले ना कोई ज़ोर, शाह पातशाह आपणा हुक्म मनाईआ। सच सुल्तान चढ़ाए साचे घोड़, शब्दी घोड़ा इक्क वखाईआ। जिस दा दो जहानां बाहर लग्गे पौड़, पुरी लोअ चरन ना कोई टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ। आत्म परमात्म वेख रल के, रंग राता आप जणाइंदा। भगत

सिँघासण वेख मल्ल के, जिस घर श्री भगवान फेरा पाइंदा। निरगुण जोत वेख बल के, बिन तेल बाती डगमगाइंदा। साचे मन्दर वेख वड़ के, निरगुण इक्को नज़री आइंदा। सच सिँघासण वेख चढ़ के, सो पुरख निरञ्जण गोद बहाइंदा। जींवदिआं जग वेख मर के, मर जीवत आपणे नाल रखवाइंदा। प्रेम प्रीती पाणी वेख भर के, काया कुंभ घड़ा अमृत नाल भराइंदा। बिरहों वैराग अंदर वेख सड़ के, अगनी जोती रूप जणाइंदा। प्रभ चरनां सीस वेख धर के, धर धरनी धरत लेखा आप मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां खेल वखाइंदा।

जन भगतां पल्लू वेख फड़, निरगुण निरवैर रिहा जणाईआ। एका दूआ चुक्के डर, भय सीस ना कोई वखाईआ। साचा अक्खर लैणा पढ़, अबिनाशी करता रिहा पढ़ाईआ। घर परमेश्वर मिले वर, कन्त लभ्भण कोई ना जाईआ। सोभावन्त सुहाए नर, कुलक्खणी रूप ना कोई वखाईआ। साचे मन्दर बहणा चढ़, श्री भगवान दए वखाईआ। तू ही तू लैणा कर, मैं ममता मेरी मुकाईआ। जिस ने लाई तेरी जड़, सो चोटी रिहा जणाईआ। हँ ब्रह्म प्रभ रूप धर, आत्म तेरी वंड वंडाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखे खड़, परमात्म होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए मुकाईआ। साचा लेखा मुके भगतां संग, श्री भगवान आप मुकाइंदा। घर आ के देवे अनन्द, अनन्द इक्को इक्क दरसाइंदा। साहिब हो के गावे छन्द, निमाणयां आपणे गले लगाइंदा। बन्दीख़ाना तोड़े बन्द, बन्दना इक्को इक्क समझाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्क दूजे नाल पाए गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी आपणी सेव कमाइंदा। उठ सवाणी लै कुछ मंग, कलिजुग अन्तम वेला आइंदा। पीआ प्रीतम कोलों मूल ना संग, बिन डिठिआं वेख वखाइंदा। बिरहों वैरागण कुठी नेत्र रो के पा डण्ड, डण्डौत इक्को इक्क समझाइंदा। अन्त फेर ना होवें रंड, जगत रंडेपा आप कटाइंदा। माणस जन्म ना होए भंग, भगत दवारा इक्क वडिआइंदा। तूं भगतां अंदर बैठी लंघ, श्री भगवान तेरे मन्दर फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखे लाए भगतन आत्म, मेल मिलाए पुरख परमात्म, पारखू आपणा फेरा पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सदा सदा सद दासी दासन, दस्तगीर बेनज़ीर शाह हकीर हरिजन हरि हरि रूप समाईआ। (१६ जेठ २०२० बि)

आत्म कहे मैं सदा सदा प्यासी, पसचाताप जगत लोकाईआ। आत्म कहे मैं सदा उदासी, धीरज सति ना कोई जणाईआ। आत्म कहे मैं सदा फासी, लक्ख चुरासी तन हंढाईआ। आत्म कहे मैं सदा मारां झाकी, प्रभ तेरा ध्यान लगाईआ। आत्म कहे कब देवें बाकी, मेरा लहणा पूर कराईआ। आत्म कहे कब खैहड़ा छुट्टे तन ख़ाकी, पंज तत्त नाता तोड़ तुड़ाईआ। आत्म कहे कब बणें साकी, अमृत जाम इक्क प्याईआ। आत्म कहे कब खोलूं ताकी, आपणा मन्दर दएं वखाईआ। आत्म कहे कब चढ़ूं राकी, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। आत्म कहे कब बणें साथी, साचा संग निभाईआ। आत्म कहे कब देवें आपणा पूजा पाठी, इक्को निरंतर नाम जणाईआ। आत्म कहे कब वखाएं ऐरापत हाथी, दक्खण दिशा मिले वडयाईआ। आत्म कहे कब लहणा चुक्के लोकमाती, मतलब मेरा हल्ल कराईआ। आत्म कहे कब पुछें वाती, घर साजण फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा नैण उठाईआ।

आत्म कहे कब मेलें मेल, जगत विछोड़ा मिटाईआ। आत्म कहे कब चाढ़ें तेल, घर साचे सगन मनाईआ। आत्म कहे कब होवें सज्जण सुहेल, आपणे अंग लगाईआ। आत्म कहे कब खेलें अचरज खेल, निरवैर आपणी सेव कमाईआ। आत्म कहे कब पंज तत्त काया कटें जेल, बन्दीख़ाना दएं तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ।

आत्म कहे कद आवें घर, ग़रीब निवाज़ फेरा पाईआ। आत्म कहे कब चुक्के डर, दीनां नाथ होएं सहाईआ। आत्म कहे कब मिले दर, रघनाथ आपणे अंग लगाईआ। आत्म कहे कब मन्दर वेखां चढ़, गृह तेरा दरसन पाईआ। आत्म कहे कब ढोला लवां पढ़, इक्क तेरा नाम ध्याईआ। आत्म कहे कब पल्लू लवां फड़, तेरे पल्लू गंढ पवाईआ। आत्म कहे कब दरसन वेखां खड़, सच सरूपी तेरा दरसन पाईआ। आत्म कहे कब मिलें नरायण नर, नारी आपणी लएं परनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, होवे आप सहाईआ। आत्म कहे कब मिलें मीत, घर सज्जण फेरा पाईआ। आत्म कहे कब बदलें रीत, पिछला लेखा जगत चुकाईआ। आत्म कहे कब अमृत बख्शें ठांडा सीत, साची धार चलाईआ। आत्म कहे कब गाएं अगम्मी गीत, अथाह करें पढ़ाईआ। आत्म कहे कब मेरी वासना लएं जीत, आप आपणे विच्च छुपाईआ। आत्म कहे कब खैहड़ा छुडाएं मन्दर मसीत, घर इक्को इक्क वखाईआ। आत्म कहे कब नज़री आएं अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। आत्म कहे मैं तैनूं रही उडीक, प्रभ नेत्र नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वडयाईआ।

परमात्म कहे मेरा साचा नेम, आत्म आत्म सच जणाइंदा। मेरे मिलण दा सच प्रेम, प्रीती इक्को इक्क वखाइंदा। दुष्ट दमन कीता उत्ते हेम, कुण्ट आपणे लेखे लाइंदा। दरस दिखाए नैन बैन, बेपरवाह फेरा पाइंदा। रसना जिह्वा सारे कहण, अन्तर ध्यान ना कोई लगाइंदा। सदा सदा सद देवां देण, लेखा सभ दी झोली पाइंदा। जो मेरे हो के रहण, तिन्नां आपणा मेल मिलाइंदा। नाता तोड़ साक सज्जण भाई भैण, बंधन इक्को इक्क वखाइंदा। साचा भाणा सिर ते सहण, दुःख सुख विच्च बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क समझाइंदा।

आत्म सिख्या लै सिख, परमात्म रिहा जणाईआ। सच दवारिउँ मिले भिख, पावणहार बेपरवाहीआ। नज़री आए दह दिश, चार कुण्ट इक्क रुशनाईआ। सच प्रीती वंडे हिस, हिस्सा इक्को इक्क वखाईआ। निहकर्मी लेखा दए लिख, लेखा लिखे बिन कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

आत्म सुण परमात्म चोज, परम पुरख जणाइंदा। आदि जुगादी कर कर चोज, चोजी आपणा खेल वखाइंदा। तेरा मेल मिलावे नित नित रोज़, रोज़ा इक्को इक्क सुहाइंदा। समझयां किसे ना आवे सोच, सोचयां हत्थ ना कोई रखाइंदा। जो आत्म प्रभ दरसन रही लोच, तिस लोचा पूर कराइंदा। मेल मिलावा निर्मल जोत, जोती आपणा रंग रंगाइंदा। भाग लगाए साचे कोट, बंक दवार इक्क सुहाइंदा। नाम अगम्म लगा चोट, सोई सवाणी आप उठाइंदा। अगला पिछला कढ़ु रोस, जिस वेले दया कमाइंदा। चुप्प कर के बैठा रहे ख़ामोश, ख़ाह मख़ाह झगढ़ा कोई ना पाइंदा। दोशी निरदोशी कोई ना देवे दोश, दोश आपणे उप्पर ना

कोई रखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची होश, होशिआर हो के वेख वखवाइंदा।

आत्म कहे परमात्म तेरी उडीक, नित नित ध्यान लगाईआ। आपणा वेला दस्स ठीक, कवण वेला ठीकर दएं भन्नाईआ। सच मिलण दी दस्स प्रीत, गुण इक्को इक्क समझाईआ। कद वसें आण नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। तेरा मार्ग दिसे बारीक, राह खैहड़ा नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा फेरा पाईआ। आत्म सुण सच संदेसा, परमात्म आप जणाइंदा। निरगुण निरवैर धारे वेसा, जोती जामा भेख वटाइंदा। सम्बल वसे साचे देसा, देस दसन्तर सोभा पाइंदा। तेरी बदले फेर रेखा, रेखा आपणे नाल मिलाइंदा। तेरा वटाए अव्वलड़ा भेसा, भेस साचा आप समझाइंदा । भगतां अंदर तेरा लेखा, लहणेदार वेख वखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप समझाइंदा।

आत्म कहे परमात्म मीत, कवण भगत मिले वडयाईआ। मैं करां ओस नाल प्रीत, जो तेरा ध्यान लगाईआ। अन्तम आपणा आप लवां जीत, हार नज़र कोई ना आईआ। श्री भगवान निशाना दस्से ठीक, सच सच समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची मत इक्क दरसाईआ।

सुण आत्म दस्से भगवान, परमात्म दया कमाइंदा। मैं पंज तत्त अंदर तैनूं रक्खां आप आण, आप आपणी दया कमाईआ। फेर करां मात पहचाण, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। तेरी बाली बुध अज्ञाण, मेरी सार कोई ना आईआ। सो भगत होए प्रधान, जिन्नां तन ख़ाकी दिआं वडयाईआ। तेरे अन्तर उपजे ज्ञान, भेव अभेद खुल्लाईआ। तेरा लहणा चुकाए आण, आप आपणा फेरा पाईआ। तूं गौणा सच्चा गान, इक्को राग जणाईआ। मिले मेल सच्चे सुल्तान, शाह पातशाह होए सहाईआ। नौबत वज्जे दो जहान, डंका इक्को नाम शनवाईआ। सोहँ गीत गीत महान, पत्तत्त पुनीत आप जणाईआ। अन्तम लेखा चुके आण, लहणा पूरब झोली पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सोहँ रूप इक्क दूजे विच्च मिल जाण, मिल मिल आपणा रूप ना कोई रखवाईआ। (१५ जेठ २०२० बि)

आत्म परमात्म मंत, इक्क नमो मंत्र सर्ब पढ़ाईआ। आत्म परमात्म खेल जीव जंत, लक्ख चुरासी सर्ब समाईआ। आत्म परमात्म नाता नार कन्त, निरगुण निरगुण सेज हंडाईआ। आत्म परमात्म खेल श्री भगवन्त, भगत भगवान राह वखाईआ। आत्म परमात्म महिमा अगणत, जुग चौकड़ी शास्त्र सिमरत वेद पुरान रहे जस गाईआ। आत्म परमात्म गृह मन्दर साची संगत, घर घर विच्च खुशी रखवाईआ। आत्म परमात्म बोध अगाधा पंडत, कंचन गढ़ करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म सदा अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोई कराईआ। आत्म परमात्म, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार वखाईआ।

आत्म परमात्म धार निराली, निरगुण निरगुण आप उपाइंदा। आत्म परमात्म जोत अकाली, अकल कलधारी भेव चुकाइंदा। आत्म परमात्म सदा सवाली, दर साचे मंग मंगाइंदा। आत्म परमात्म सदा प्रितपाली, बण प्रितपालक सेव कमाइंदा। आत्म परमात्म सद करे दलाली,

वणज वणजारा नाउँ रखाइंदा। आत्म परमात्म नित नवित्त घाल घाली, सेवा सेवा रूप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कारे लाइंदा।

आत्म परमात्म सद संजोग, हरि भगत मिले वडयाईआ। आत्म परमात्म अमृत रस भोग, रस इक्को इक्क चखाईआ। आत्म परमात्म ढोला सलोक, मेरा तेरा राग अलाईआ। आत्म परमात्म लेखा चुक्के लोक परलोक, श्री भगवान सच्ची सरनाईआ। आत्म परमात्म मेला काया कण्पड़ कोट, घर मन्दर वेख वखाईआ। आत्म परमात्म निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आत्म परमात्म मिलण दा रक्खे शौक, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। आत्म परमात्म जन भगतां अंदर मिले पहुंच, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवणहार वडयाईआ। आत्म परमात्म मेल सर्बग्ग, सर्ब घट वासी आप मिलाइंदा। आत्म परमात्म भेव अलग्ग, घर घर विच्च पर्दा पाइंदा। आत्म परमात्म गाए सद, ढोला इक्को राग अलाइंदा। आत्म परमात्म करे हज्ज, दीद ईद वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म सद रही लभ्भ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक्क उठाइंदा।

आत्म परमात्म सच रस, फल फूल ना कोई वखाईआ। आत्म परमात्म सदा वस, वसीकार इक्क अखवाईआ। आत्म परमात्म मार्ग दस्स, नित नवित्त करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म मेल मिलावा हस्स हस्स, घर साचे खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म पन्ध मुकाए नट्ठ नट्ठ, दूर दुराडा नेड़े आईआ। आत्म परमात्म होए इक्ठ, भगत दवार वज्जे वधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोवें मिल के गावण जस, आत्म परमात्म विच्च समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। आत्म परमात्म सदा गोली, जुग जुग सेव कमाईआ। आत्म परमात्म दर दरवाज़ा रही खोल्ही, ताकी बन्द ना कोई कराईआ। आत्म परमात्म घोल घोली, आप आपणा घोल घुमाईआ। आत्म परमात्म समझे बोली, सोहँ ढोला सच शनवाईआ। आत्म परमात्म बण विचोली, मेल मिलावा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहणा जाणे थाउँ थाईंआ। आत्म परमात्म नेड़े दूर, दूरन दूर खेल खलाइंदा। आत्म परमात्म हाज़र हज़ूर, हरिजन आपणे घर वखाइंदा। आत्म परमात्म इक्को नूर, नूर नुराना नूर धराइंदा। आत्म परमात्म इक्को तूर, सच साचा नाद वजाइंदा। आत्म परमात्म आसा मनसा पूर, पूरी आसा सद कराइंदा। आत्म परमात्म सर्ब कला भरपूर, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। आत्म परमात्म मिले ज़रूर, जन भगत दवारे मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप मुकाइंदा।

आत्म परमात्म सदा साथ, तन माटी खेल रचाईआ। आत्म परमात्म गाए गाथ, नाउँ निधाना सिफ्त सालाहीआ। आत्म परमात्म होए दास, दासी आपणा रूप वटाईआ। आत्म परमात्म निरगुण धारा शाख़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप समझाईआ।

आत्म परमात्म भगत भरवासा, भगवन देवणहार वडयाईआ। आत्म परमात्म निरगुण सरगुण चुकाए रोसा, रुठड़े आप मनाईआ । आत्म परमात्म मिलण दा रक्खे सद शौंका, इक्को इक्क ध्यान लगाईआ। आत्म परमात्म कलिजुग अन्त मिल्या इक्को मौका, सो साहिब रिहा

समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म कर परवान, भगतां लेखा आपणे खाते पाईआ। (१७ जेठ २०२० बि)

श्री भगवान मेरा वेख बुड़ेपा, आत्म कूके दए दुहाईआ। नव नौं चार भुल्लया चेता, मेरी सार कोई ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलिजुग इकवंजा बवंजा नाल कीता हेता, पंज इक्क नाल मिलाईआ। बाकी सभ दा सुंञां खेता, घर मिले ना कोई वडयाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुरान खाणी बाणी तेरा लैंदे रहे ठेका, जुग चौकड़ी हिसा मात वंडाईआ। दूर दुराडा नाम आपणा भेजा, रसना जिह्वा ढोला गाईआ। मेरी सुहञ्जणी सुंञीं होई सेजा, नर नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा जीवण दे बदलाईआ।

बुढ्ढी नढ्ढी बणी जवान, जोबन कम्म किसे ना आईआ। छड्डी बैठा श्री भगवान, आपणा नाता मोह तुड़ाईआ। हड्डी हड्डी बणया मेरा मकान, लक्ख चुरासी घर घर फेरा पाईआ। कमली हो के बणी रही अञाण, तेरी सुध रही ना राईआ। रंगला पीहड़ा वेख विच्च मकान, काया अंदर खुशी मनाईआ। उत्ते बैठी बण रकान, नेत्र कजला एका पाईआ। दह दिशा कर ध्यान, नेत्र नैण अक्ख मटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा रूप नज़र ना आईआ।

काया मन्दर बैठी पीहड़े, पावे रंग ना कोई वखाईआ। सोहणे बसतर पहने लीड़े, तन कण्पड़ रही हंडाईआ। जगत वासना हत्थ कलीरे, मौली तन्द बंधाईआ। जुग चौकड़ी नौजवान सिर ते बंनूदे रहे चीरे, मेरे नाल करन कुड़माईआ। पुरख अबिनाशी तेरे नज़र ना आए हीरे, गुरमुख बैठे मुख छुपाईआ। जिध्धर वेखां पापी जीउड़े, तेरा नाम रहे भुलाईआ। राह लंघदे वेखे भीड़े, साचा मार्ग नज़र कोई ना आईआ। शरअ शरीअत वझे ज़ंजीरे, कुंजी हत्थ ना कोई फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, क्यों बैठा आप भुलाईआ। काया मन्दर वेख पलंघ, आपणा जोबन रही हंडाईआ। ना शाह ना दिसां नंग, ख़ाली झोली ना कोई वडयाईआ। तेरा मन्दर नहीं वेख्या लंघ, दर दरस कोई ना पाईआ। तेरे बाहझों होई रंड, सुहाग नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

परमात्म कहे तूं आत्म निक्की, निक्की निक्की कारे लाईआ। तैनूं लभ्भदे गए मुनी रिखी, हत्थ किसे ना आईआ। तेरी धार जीव जीअ की, लक्ख चुरासी विच्च टिकाईआ। तेरे मस्तक बिन्दी टिक्की, इक्को इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा जणाईआ।

आत्म कहे परमात्म मेरे, मैं बैठी राह तकाईआ। श्री भगवान आ वड़ वेहड़े, मैं नित नित ध्यान लगाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग उजड़दे वसदे रहे खेड़े, मेरा खैहड़ा ना कोई छुडाईआ। शाह हकीरां घर ला ला वेखे डेरे, डेरा पार ना कोई कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा मेल मिलाईआ।

सुण स्वामी मेरे सज्जण, मैं सच सच सुणाया। तेरे प्रेम अंदर होई मग्न, मंगल इक्को इक्क

गाया । कवण वेला पाएं सगन, साचा रंग रंगाया । घर प्रकाश दीपक जगण, अज्ञान अन्धेर रहे ना राया। गुरमुख गौण तेरा भजन, इक्को भउ गोबिन्द रखाया। मैं ओनूं धूढ़ी करां मज़न, आप आपणी मैल धवाया। तूं आवें पड़दे कज्जण, सच दोशाला हत्थ उठाया। तेरे बाहझों सांईआं होई नंगन, ढाकण कू पत नज़र कोई ना आया। कर किरपा लाईं अञ्जण, जगत वछोड़ा रिहा सताया। तेरा नाउँ मध सूधन मदन, मधर बैण तेरी सरनाया। मेरी पूरी करनी सधर, हउँ सदके वारी घोल घुमाया। चारों कुण्ट नौं खण्ड पृथ्मी तेरे विछोड़े अंदर पिआ ग़दर, गदा चकर नज़र कोई ना आया। सतिजगु त्रेता द्वापर कलिजुग पढ़ पढ़ थक्की अक्खर, अक्खरी तेरा राग अलाया । जिंनां चिर घर आ ना मिलें परमेश्वर, पिर आपणा फेरा पाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेरा दे वसाया।

आत्म लाल रंग लै सालू, हरि सतिगुर आप जणाईआ। तेरे घर आए दयालू, विच्च दयालता फेरा पाईआ। किरपा निध सदा किरपालू, किरपन वेखे थाउँ थाईंआ। लक्ख चुरासी विच्चों भालू, गुरमुख गुर गुर आप उठाईआ। अगनी रेत ना दिसे बालू, अमृत मेघ इक्क बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

प्रेम प्रीती ओढण सुभर, सुभर सोभावन्त जणाइंदा। श्री भगवान नेत्र वेखे उभर, दूर दुराडा नेड़े आइंदा। अन्तम पैंडा आया मुक्कण, पान्धी आपणा पन्ध मुकाइंदा। परमात्म तैनूं आए चुक्कण, साची डोली आप बहाइंदा। शेर हो के आए बुक्कण, भबक आपणे नाम लगाइंदा। ना माणस ना दिसे मनुखण, मनुखता आपणी गंढ पवाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस नूं झुकण, सो साहिब वेस वटाइंदा। भगत सुहेले साचे उठण, जिनूं आपणा भेव जणाइंदा। जगत विछड़ी आए पुच्छण, घर ठाकर फेरा पाइंदा। जुग चौकड़ी वज्जी लाहे बुक्कल, पीची गंढ आप खुलाइंदा। तूं नाशुकरी कदे ना कीता शुकर, जुग जुग शहनशाह आपणी कार कमाइंदा। वेखीं कलिजुग अन्त ना जाईं मुकर, मुकम्मल आपणा हुक्म जणाइंदा। क्यों, पुरख अकाल आपणे नाल मिलाया गोबिन्द पुत्तर, पिता पूत एका घर सोभा पाइंदा। निरगुण धारों आया उतर, पौड़ा होर ना कोई लगाइंदा। बाली नढी चुक्के कुछड़, घर आपणे आप बहाइंदा। प्रेम प्रीती देवे टुक्कर, भुक्खयां भुक्ख आप गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सवाणी लेखे लाइंदा।

आत्म कहे मैं नित नित रोवां, नेत्र नैणां छहबर लाईआ। तेरे जोगी तेरी होवां, तुध बिन अवर ना कोई मनाईआ। पारब्रह्म कब तेरी सेजे सोवां, सुख आसण डेरा लाईआ। अमृत रस इक्को चोवां, तेरी धार विच्चों धार प्रगटाईआ। खुली मींढी वाल खोहवां, पट्टी सीस ना कोई गुंदाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत टोहवां, ठाकर मन्दर शिवदवाले हत्थ किते ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे घर वज्जे वधाईआ। आत्म सवाणी जाणा जाग, सो साहिब आप जगाइंदा। अन्तम लग्गण वाला भाग, पुरख अकाल वेख वखाइंदा। घर दीपक जोत जगे चिराग़, तेरा अन्धेरा मात मिटाइंदा। मेल मिलाए कन्त सुहाग, सोहणी रुत्त बसन्त वखाइंदा। बिरहों लग्गी बुझाए आग, प्रेम प्रीती इक्क जणाइंदा । आपणे हत्थ विच्च पकड़े वाग, वासता आपणे नाल पाइंदा। तेरा धोवे दुरमत दाग़, अमृत सीर मुख चवाइंदा। फड़ के हँस बणाए काग, काग हँस रूप वटाइंदा। कोझी कमली दी

रक्खे लाज, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। सो पुरख निरञ्जण मार आवाज़, हँ ब्रह्म आप उठाइंदा। साची सेजे चढ़ना भाज, भाण्डा भरम भउ भन्नाइंदा। तेरा रच के वेखे काज, करता आपणा खेल कराइंदा। भगतां कोलों मंगीं इक्को दाज, साजी सिख्या आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद आप खुल्ह़ाइंदा।

साचे भगतो दिउ दाज, आत्म परमात्म दर साचे वासता पाईआ। कलिजुग अन्त मिले ना कोई इमदाद, आमल नज़र कोई ना आईआ। पत विछोड़े नार बणाई कमज़ात, कुलक्खणी दर दर फेरा पाईआ। ठाकर मिल्या ना कोई साथ, ठोकर सच ना कोई लगाईआ। ख़ाली वेंहदी रही हाथ, दस्त दस्त ना कोई मिलाईआ। भुल्ली रही पुरख अबिनाश, मन्दर मसजद कुल्ली ध्यान लगाईआ। कूड़ी क्रिया वेंहदी रही खेल तमाश, जगत वासना धीआं पुत्तर गंढ पवाईआ। घर पाया ना शाहो शाबाश, शहनशाह संग ना कोई निभाईआ। जम्मदी मरदी औंदी जांदी हुंदी रही नास, नास्तिक आपणा रूप वटाईआ। लेखे लग्गा ना कोई स्वास, तन माटी सवाह छार रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन रही सदा उदास, अन्तर धीर ना कोई धराईआ।

सो पुरख निरञ्जण दए धरवासा, धुर दी बाणी आप जणाइंदा। अगला वेख हुण तमाशा, श्री भगवान आप वखाइंदा। काया भरनहारा कासा, नाम गोलक विच्च टिकाइंदा। नव नौं चार दी पूरी करे आसा, पिछली तृसना मेट मिटाइंदा। जन भगतां अंदर तेरा कर के वासा, वासता आपणे नाल रखाइंदा। जागत सोवत करे बातां, बातन आपणा खेल खलाइंदा। सच पढ़ाए इक्को गाथा, नाम निधाना आप समझाइंदा। सो साहिब पुरख समराथा, हँ डेरा वेख वखाइंदा। आत्म तेरा बंन्ह़े परमात्म नाता, नाता आपणे नाल जुड़ाइंदा। आदि जुगादी सज्जण साका, सगला संग रखाइंदा। नेत्र खोल्ह़ वेख ताका, निरगुण नूर नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मेला मेल मिलाइंदा।

उठ परमात्म कहे आत्म कर त्यारी, त्रैगुण अतीता आप जणाईआ। जलवा वेख जोत निरँकारी, निरगुण नूर रिहा दरसाईआ। आपणी वस्त सांभ पटारी, सखीआं संग रिहा तराईआ। नव नौं चार रही कवारी, मिल्या मेल ना सच्चे माहीआ। काया हौदे चढ़दी रही हमारी, मन हाथी उप्पर आसण लाईआ। जगत वासना कटदी रही दिहाढ़ी, जेरज अंडज उत्भुज सेतज फेरा पाईआ। कोटन कोट वार बणदी रही लाड़ी, लाड़े कोट कोट हंडाईआ। साचे घर ना होई प्यारी, प्रीती हक़ ना कोई लगाईआ। सदा सद हुंदी रही ख़वारी, साचा राह नज़र ना आईआ। लग्गदी टुटदी रही यारी, यारी तोड़ ना कोई निभाईआ। कूड़ी क्रिया अंदर देंदी रही बहारी, साचा मन्दर साफ़ ना कोई कराईआ। सखीआं नाल मिल के भरदी रही पाणी, अमृत सरोवर नज़र कोई ना आईआ। खेडां खेडदी रही विच्च हाणीआं हाणी, साचा हाणी ओड़ ना कोई निभाईआ। जुग जुग पढ़दी रही बाणी, तीर निराला बाण ना कोई लगाईआ। आपणी दस्सदी रही कहाणी, कहावत जगत नज़र ना आईआ। राजयां घर बणदी रही राणी, तन शंगार इक्क हंडाईआ। जोबन हंडौंदी रही जवानी, नेत्र नैण नैण मटकाईआ। वसदी रही चार खाणी, चारों जुग वंड वंडाईआ। नव नौं चार बणी रही नादानी, साची समझ कोई ना आईआ। कलिजुग अन्त श्री भगवन्त देवे इक्क निशानी, सच सुच्च आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आत्म सोई आप जगाईआ।

सोई उठ लै अंगढ़ाई, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। ना सज्जण ना कोई साईं, साथी नज़र कोई ना आईआ। ना पिता ना कोई माई, भैण भाई ना कोई वडयाईआ। ना धी ना कोई जवाई, पुत्त पोतरा संग ना कोई रखाईआ। चारों कुण्ट वेख दए दुहाई, इक्क इकल्ली रही कुरलाईआ। झल्ली हो के भुलया माही, साची झलक ना किसे वखाईआ। औंदयां जांदयां पुछे राही, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे हुक्मे रचन रचाईआ।

आत्म कहे मैं सदा भुल्ली, भुल्लणहार गुण ना कोई जणाईआ। तेरे बाहझों पीआ रुली, रुलिआं सार कोई ना पाईआ। हो ख़िज़ां कलिजुग हुल्ली, मेरा हुलीआ नज़र किसे ना आईआ। किणका किणका हो के डुल्ली, साची गंढ ना कोई बंधाईआ। मैं वसदी रही सदा काया कुल्ली, साढ्ढे तिन्न हत्थ अंदर डेरा लाईआ। जगत परवार विच्च फली फुल्ली, बंस सरबंस नाउँ धराईआ। अन्तम कोई ना पावे मुल्ली, कीमत करता ना कोई रखाईआ। जुग जुग मेरी मींढी रही खुली, पट्टी सीस ना कोई गुंदाईआ। सच दन्दासा मलया ना आपणी बुल्लीं, बत्ती दन्द ना रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलिजुग अन्तम आपणे लड़ लगाईआ।

परमात्म कहे सुण आत्म भोली, भोला भाउ हरि जणाइंदा। मेरे भगतां अंदर बण गोली, साची सिख्या इक्क दृढ़ांइंदा। सच प्रीती घोल घोलीं, घोल घुमाई लेखे लाइंदा। अंदर वड़ के बोलीं इक्को बोली, सो साहिब आप समझाइंदा। हँ ब्रह्म पर्दा खोलीं, दूई द्वैती परे हटाइंदा। फिर वेखे तेरी रंगली डोली, रंग रंगीला आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क दृढ़ांइंदा।

आत्म कहे मैं भगतां अंदर जावांगी। निउँ के आपणा सीस निवावांगी। जग नैणां नेत्र शरमावांगी। निज नेत्र दरसन पावांगी। नित उठ ढोला इक्को गावांगी। सो पुरख निरञ्जण इष्ट मनावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा मोहे वर, तेरे भगत दवारे बह के तेरी अलख जगावांगी। परमात्म कहे जा भगत दवारे वड़, दर मन्दर इक्क वखाईआ। सोहँ ढोला लैणा पढ़, गीत गोबिन्द अलाईआ। राह विच्च ना जाणा अड़, नीवीं अक्ख रिहा समझाईआ। इक्को निरगुण रक्खणा डर, सरगुण भय ना कोई रखाईआ। उच्चे मन्दर वेखणा खड़, पुरख अबिनाशी नज़री आईआ। साचा पल्लू लैणा फड़, सालू आपणी गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर नरायण होए सहाईआ।

नर नरायण परनाए नारी, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। सोलां रूप करे शंगारी, सोलां इछया पूर वखाईआ। सोलां कलीआं आसण पाए शाहसवारी, शहनशाह आपणे हत्थ रक्खे वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ। आत्म कहे मैं तन शंगार रखावांगी। नेत्र इक्क ध्यान लगवांगी । चारों कुण्ट वेख वखवांगी। पुरख अबिनाशी राह तकावांगी। निउँ निउँ सजदा सीस झुकावांगी। बण बरदा सेव कमावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस वेले आए मेरे घर, लक्ख लक्ख शुकर मनावांगी।

जिस वेले प्रभू आएगा। मेहरवान दया कमाएगा। तेरी सुरती सुरत उठाएगा। अकाल मूरत

नज़री आएगा। नाद तूरत इक्क वजाएगा। सच सूरत इक्क दरसाएगा। नाता कूड़ सर्ब तुड़ाएगा। मूर्ख मूढ़ चतुर बणाएगा। मस्तक धूड़ चरन लगाएगा। लक्ख चुरासी कट के जूड़, निरगुण आपणे नाल मिलाएगा। तेरी आसा करे पूर, मनसा आपणे विच्च छुपाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा सद हाज़र हाज़ूर, हरि फड़ के आपणे पौड़े आप चढ़ाएगा। (१७ जेठ २०२० बिक्रमी बेला सिँघ दे गृह)

आत्म जोती : आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म सरनाइआ। (३ कतक २०१५ बि)
आत्म जोती शब्द ज्ञान। (३ अस्सू २०११ बि)
आत्म जोती ब्रह्म ज्ञान, कलिजुग भुल्ले जीव निधान, गुरमुख साचे हरि जगाइंदा। (१२ जेठ २०१२ बि)

आत्म रस : जप जप नाम जीव, मिले आत्म रस। जोत सरूपी आवे प्रभ वस। (२ विसाख २००८ बि)
आत्म रस शब्द सरूर है। (२६ पोह २०११ बि)

अरजोई : गुर अवतार पैगम्बर कहण प्रीतम साडी अरजोई, बेनन्ती सच सुणाईआ। तेरे अग्गे उजर ना कोई, सिर सके ना कोई उठाईआ। (१ माघ श सं १)
लक्कड़ी कहे मेरी अरजोई अरदास इक्क, बेनन्ती इक्क सच सुणाईआ। कुछ मेरा लेखा लिख, प्रभू मिले सरनाईआ। (१७ माघ श सं १) (प्रारथना)

अरदास : जन भगत कहण प्रभ सच्ची अरदास, अरजोई इक्क सुणाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी वसणा पास, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगाईआ। (५ मध्घर २०२१ बि)
भगत वछल तेरे अग्गे इक्क अरदास, बेनन्ती सच सुणाईआ। भगत सुहेले गुर चेले रहे आख, धुर दे मेले लै मिलाईआ। (१० मध्घर २०२१ बि) (मुराद मंगण दी क्रिया)

अल्ला : जिस नूं कहन्दे जलवागर खुदा, अल्ला अलाह नूर रुशनाईआ। सो शहनशाहां दा शहनशाह, पातशाहां दा पातशाह वड वडयाईआ। (५ कत्तक श सं २)

सो पुरख अकाला दीन दयाला सभ दे बख्शणहार गुनाह, गुणां दा मालक इक्क अखवाईआ। जिस नूं कहन्दे नूरी अलाह, खुदा खुद मालक धुरदरगाहीआ। जिस विच्च जीव जंत सारे जाण समां, बचया कोई रहण ना पाईआ। (२६ भादरों श सं ३)

प्रभ तैनूं कहन्दे मीआं अल्ला, आलम इलम विच्च समझाईआ। (३ अस्सू २०२१ बि)
जुग चौकड़ी तैनूं राम रहीम वाहिगुरू मन्नदे रहे अल्ला, आलमीन अखवाईआ। (७ मध्घर २०२१ बि)

अस्तिक : अस्तिक नास्तिक खेल खिलाया, वासताक रूप विच्च टिकाईआ । (२४ जेठ २०१६ बि)
तेरा खेल तक्कया आहिस्ता आहिस्ता, अस्तिक तों नास्तिक हुंदी दिसे तेरी लोकाईआ। (११ अस्सू श सं ८) (प्रमातमा दी हसती नूं मन्नण वाला)

अलख : प्रभ अलख अलेख किसे भेव ना पाया। (२५ चेत २००८ बि)
अलख अभेव भेव लखा ना जाउ। कर किरपा गुरसिखां प्रभ दे जणाउ। (१३ विसाख २००८ बि)
महाराज शेर सिँघ कलंकनिह अलख अभेवा। अलख प्रभ ना किसे लखया। आपणा भेव ना किसे प्रभ दस्सया। (६ सावण २००८ बि)
भगत भगवान तेरे दवारे मंगण, मांगत हो के अलख जगाईआ। तूं चाढ़ आपणा रंगण, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। (२३ हाढ़ २०२१ बि)
गुर अवतार पीर पैगम्बर जगावण अलख, उच्ची कूक कूक नाअरा जगत अलाईआ। (२० भादरों २०२१ बि)

अलेख : जिस दा लेख अलेख कर के गुर अवतारां लिखा, लेख लेखणी नैण शरमाइंदा। (२५ हाढ़ २०२१ बि)
तेरा लेखा अलेख कोई पढ़ ना सके विच्च संसार, संसारी समझ ना कोई वडयाईआ। (१५ कत्तक २०२१ बि)
जन भगत मेरा नाम अलेख, लिखत ना कोई समझाईआ। (७ मध्घर २०२१ बि)
अलख अलेख ना लिखया जाए। (१५ साावण २००६ बि)
आपे आप : हरि आपे भगत आप भगवन्त, भगती रूप आप अखवाईआ। आपे साध आप हरि सन्त, सांतक सति आप हो जाईआ। आपे नार आपे कन्त, नर नरायण आप अखवाईआ। आपे आदि आपे अन्त, मध आपणी खेल कराईआ। आपे नाद धुंन आपे मंत, आपे रागी राग अलाईआ । आप बणाए आपणी बणत, घड़न भन्नण आप हो जाईआ। आपे रविआ लक्ख चुरासी जीव जंत, घट घट आपणा आसण लाईआ। आपे रुत्तड़ी रुत्त बसन्त, पत डाली आप महकाईआ। आपे महिमा होए अगणत, आपे लिख लिख लेख समझाईआ। आपे भुक्ख आपे नंगत, आपे तृष्ना रिहा वधाईआ। आपे दरवेश दर बणे मंगत, आप घर घर अलख जगाईआ। आपे जेरज आपे अंडज, उत्भुज सेतज आपणा खेल खिलाईआ। आपे बोध ज्ञाता पंडत, आपे हरफ़ हरफ़ रिहा सलाहीआ। आपे करे सर्ब खण्डत, खण्डा खड़ग आप हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराईआ। आपे भगत आप भगवान, आपे साची खेल खलाइंदा। आपे जीव जंत जहान, आपे जुग जुग वेस वटाइंदा। आपे दाता आपे दान, देवणहारा आप अखवाइंदा। आपे गोपी आपे काहन, मण्डल रास आप रचाइंदा। आपे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बीआबान, समुंद सागर आपे वेख वखाइंदा। आपे शब्द नाद धुंन कान, आपे राग रागनी खेल खलाइंदा। आपे शाह पातशाह सच्चा सुल्तान, सुलाहकुल आप हो आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप खुलायंदा।

आपे भगत आपे भाओ, निरभओ आपणा खेल खलाईआ। आपे प्रेम आपे चाओ, आपे मिल मिल खुशी मनाईआ। आपे वसे हर घट थाउँ, आपे लुक लुक मुख छुपाईआ । आपे नगर खेड़ा वसाए गराउँ, गृह गृह आपणा आप धराईआ। आपे पकड़णहारा बाहों, आपे धक्का रिहा लगाईआ। आपे पिता आपे माउँ, आपे बालक रूप वटाईआ। आपे करे सच नयाउँ, आपे हुक्मी हुक्म सुणाईआ। आपे वसे थल अस्गाहों, जल थल आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ।

आपे भगत आपे नाम, आपणी करनी आप कराइंदा। आपे अमृत आपे जाम, भर प्याला आप प्याइंदा। आप रहीम आप राम, आपे रम रम खेल खिलाइंदा। आपे करता आपे काम, आपे भुगत वेस वटाइंदा। आपे जुगता बण बण दए कलाम, आपे निउँ निउँ सलाम बुलाइंदा। आपे रव सस तेज भान, आपे नूर नुराना डगमगाइंदा। आपे ज़िमी आप असमान, ख़ाकी ख़ाक हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा वेस धराइंदा।

आपे भगत आपे रंग, रंग रंगीला आप अखवाईआ। आपे सेज आप पलंघ, आपे जुग जुग रिहा हंढाईआ। आपे डोर आप पतंग, आपे गुडीआं रिहा चढ़ाईआ। आपे नाद आप मरदंग, सच मरदंगा आप सुणाईआ। आपणे मन्दर आपे लंघ, हरि आपे वेख वखाईआ । आपे गीत आपे छन्द, आपे गा गा खुशी मनाईआ। आपे रस आप अनन्द, महां अनन्द आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप दृढ़ाईआ ।

आपे भगत आप सपूत, आपे आपणी खेल कराइंदा। आपे ताणा पेटा सूत, आपे आपणी बणत बणाइंदा। आपे सुत दुलारा पूत, आपे दाई दाया सेव कमाइंदा। आपे आदि जुगादि रहे ऊत, बिन भगतां कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराइंदा।

आपे भगत आपे मित, मित्र प्यारा आप अखवाईआ। आपे प्रेम आपे हित्त, नित नवित्त आप वखाईआ। आपे काया आपे खेत, आपे अमृत मेघ बरसाईआ। आपे रुत्त बसन्ती चेत, आपे खिज़ां रूप वटाईआ। आपे वसे नेतन नेत, दूर दुराडा आप हो जाईआ। आपे जाणे आपणा भेत, भेव होर ना किसे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ ।

आपे भगत आपे कार, हरि करनी आप कमाइंदा। जगत जुग सच विहार, सति पुरख निरञ्जण आप कराइंदा। हरख़ सोग तों वसे बाहर, चिन्ता दुःख ना कोई वखाइंदा। इक्को जोग अगम्म अपार, अलख निरञ्जण आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मार्ग लाइंदा।

भगतां देवे इक्को जोग, जोगी जुगत आप जणाईआ। जन्म जन्म दा कटे रोग, रोगीआं रोग गवाईआ। मेल मिलाए धुर संजोग, बण संजोगी वेख वखाईआ। नाम निधान चुगाए चोग, सोहँ हँसा मोती मुख रखवाईआ। नाम निधाना अगाध बोध, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। कर्म कांड प्रभ आपे सोध, जन भगतां लए तराईआ। कलिजुग अन्तम पहली करे मोहत, मोह ममता दए तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहज सुभाईआ।

आपे भगत आपे दास, दासी बण बण सेव कमाइंदा। आपे वसे सदा पास, घर साचे सोभा पाइंदा। आपे पुरख आप अबिनाश, अबिनाशी पद आप हो जाइंदा। आपे मण्डल आपे रास, आपे सूरज चन्द नचाइंदा। आपे गुण आपे तास, सर्ब गुणवन्ता आपणा खेल खलाइंदा। आदि जुगादि ना होए निरास, निरासता रूप ना कोई वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां मार्ग इक्क वखाइंदा।

आपे जगत आपे राह, रहबर बण बण सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी मिलण दा रक्खे चाअ, चाओ घनेरा सच्चे माहीआ। निरगुण सरगुण बण मलाह, फड़ फड़ बेड़ा आप तराईआ। कोट जन्म दे बख्शे गुनाह, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। दरगाह साची देवे पनाह, चरन कँवल शरनाईआ। करे कराए सच निआं, साचे तखत बैठ सच्चा शहनशाहीआ। फड़ फड़ हँस बणाए कां, कागों हँस उडाईआ। निथावयां देवे थां, निओटयां इक्को ओट रखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा सालाहीआ।

आपे भगत आपे गुण, गुणवन्ता आप अखवाईआ। जुग जुग पुकार रिहा सुण, जुग करता सच्चा माहीआ। लक्ख चुरासी छाण पुण, नौं सत वेखे थाउँ थाईंआ। जन भगतां देवे नाद धुन, धुन आत्मक इक्क सुणाईआ। लेखा जाणे कुलो कुल, बेअन्त बेपरवाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे माण वडयाईआ।

आपे भगत आपे दुआर, दर दरवाज़ा आप खुल्ह़ाईआ। आपे जोत नूर निराकार, आपे पंज तत्त डेरा लाईआ। आपे नाम शब्द ख़ुमार, आपे अमृत धार वहाईआ। आपे सांतक सति ठंडा ठार, आपे अगन रूप वटाईआ। आपे जुग जुग लै अवतार, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। आपे लक्ख चुरसी करे ख़बरदार, बण बण सेवक सेव कमाईआ । आपे भगतां करे सच प्यार, भगवन आपणी दया कमाईआ। हरिजन मेला एका वार, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ । गुर चेले सोहण बंक दुआर, दर दर खुशी मनाईआ। करे प्रकाश जोत उजिआर, नूर नुराना डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन वेखे थाउँ थाईंआ।

आपे भगत आपे रूप, आपे राग रंग अलाईआ। आपे निरगुण सति सरूप, आपे सरगुण रूप वटाईआ। आपे हवण आपे धूप, आपे सुगंधी रिहा समाईआ। आपे वसे चारे कूट, दह दिशा आपे फेरा पाईआ। आपे जूठ आपे झूठ, आपे सच सुच्च दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आपे भगत आपे सुख, सुख सागर आप अखवाइंदा। आपे मानस आप मनुख, मानव आपणी खेल कराइंदा। आपे दस दस मास बह लुक, आपणा पर्दा आपे पाइंदा। आपे निरगुण सरगुण हो के पए उठ, आपणा बल आप धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाइंदा।

आपे भगत आपे धर्म, धरनी धवल धरत वडयाईआ। आपे कर्म आपे कुकर्म, निहकरमी आप हो जाईआ। आपे लज्जया आपे शरम, हया आपणे अंग वखाईआ। आपे भय आपे भेव आपे भरम, आपे भयानक रूप वटाईआ। आपे जीवन आपे मरन, आपे मर मर जीव प्रगटाईआ। आपे करनी आपे करन, करता पुरख आप अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ।

आपे भगत आपे नेम, आपे साची कार कमाइंदा। आपे अगनी आपे हेम, आपे खण्ड बह बह ध्यान लगाइंदा। आपे बानर आपे बेन, आपे बह बह खुशी मनाइंदा। आपे सागर आपे

सैन, आपे निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा आप सुहाइंदा।

आपे भगत आपे दात, दर साचे आप वरताईआ। आपे मज़हब आपे ज़ात, आपे शरअ वंड वंडाईआ। आपे खण्डां ब्रह्मण्डां वसे कायनात, आपे लोक परलोक रिहा समाईआ। आपे घट घट वेखे मार झात, आपे रूप रंग ना कोई वखाईआ। आपे खेल करे बहु बिध भांत, आपे जुग जुग वेस वटाईआ। आपे बैठा रहे इक्क इकांत, सच महल्ले सोभा पाईआ। आपे भगतां पुच्छे वात, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। आपे जाणे पूजा पाठ, आपे पढ़ पढ़ करे पढ़ाईआ। आपे तीर्थ आपे ताट, सर सरोवर आप अखवाईआ। आपे पार किनारा घाट, आपे पत्तण सच्चा माहीआ। जन भगतां मुक्के वाट, आपणा पन्ध मुकाईआ। शब्द विछौणा साची खाट, पुरख अबिनाशी सेज वछाईआ। दीपक जगे इक्क ललाट, नूर नुराना डगमगाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

आपे भगत आपे रस, अनरस आपणी खेल कराइंदा। आपे पूरी करे आस, आसा निरासा हो हो मुख छुपाइंदा। आपे पवण आप स्वास, आपे अन्तर आत्म बूझ बुझाइंदा। आपे शाहो आप शाबाश, आपे सह सह हुक्म मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा बल आप धराइंदा।

आपणा बल हरि जू धर, लोकमात वडयाईआ । जुग चौकड़ी जाए हर, लोकमात रहण ना पाईआ। गुर अवतार सेवा कर, अन्तम मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

बेपरवाह खेल खलाया, आदि अनादी धार। जुग चौकड़ी वेख वखाया, कोटन कोट जुग बीते विच्च संसार। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा लाया, शिव शंकर करे प्यार। लक्ख चुरासी बंधन पाया, आत्म परमात्म खेल अपार। गुर अवतार काया चोला सर्ब हंढाया, आवण जावण वारो वार। धुर फ़रमाणा ढोला इक्को गाया, नाद धुन जैकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग करे खेल अपार।

जुग जुग करे खेल अपर अपारा, अपरंपर आप कराईआ। निरगुण सरगुण लै अवतारा, जोती जोत करे रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार किनारा, अन्त नज़र कोई ना आईआ। कलिजुग वरते विच्च संसारा, चार कुण्ट लए अंगढ़ाईआ। धूआंधार होए अन्धयारा, अन्ध अन्धेर ना कोई मिटाईआ। जीव जंत रोवे ज़ारो ज़ारा, गिरयाज़ार सुणाईआ। चारों तरफ आए हारा, जित रूप ना कोई वटाईआ । हरि का मिले ना नाम अधारा, हरि की पौड़ी ना कोई चढ़ाईआ। फड़ फड़ धक्के जीव गवारा, पढ़ पढ़ लिखत ना कोई मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ।

साचा खेल श्री भगवान, आपणा आप कराइंदा। लक्ख चुरासी मार ध्यान, जीव जंत वेख वखाइंदा। गुरमुख विरला चतुर सुजान, पूरब जन्म संग निभाइंदा। अठ्ठे पहर करे ध्यान, प्रभ दर्शन राह तकाइंदा। कवण मेल मिलाए आण, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा। (१७ मध्घर २०१८ बि)

अन्धकार : अन्धकार जगत जां होवे। महाराज शेर सिँघ प्रगट होवे। (८ फग्गण २००६ बि)

नेत्रहीण सृष्टी अन्धी, अन्धकार ना कोई चुकाईआ। तन काया माटी पोच के बणदी चंगी, अन्तर मैल दुरमत धो ना साफ़ कराईआ। बाहरों पट्टी वौंहदी कंघी, अंदर मींढी सच ना कोई गुंदाईआ। बाहरों लाल गुलाल मैंहदी रंग रंगी, अन्तर प्रेम रंगण नज़र किसे ना आईआ। (२५ जेठ २०२१ बि)

कलिजुग अन्त श्री भगवन्त सृष्टी दृष्टी होया अन्धकारा, कूड़ी क्रिया गृह गृह घर घर साढ़े तिन्न हत्थ मन्दर अंदर बैठी डेरा लाईआ। (२० भादरों श सं १)

करे प्रकाश अज्ञान नेत्र अंन्न, अन्धकार अंदर दीपक जोत करे रुशनाईआ। (१३ सावण श सं २) जोती नूर कर प्रधान, अन्ध अन्धकार दए मिटाईआ। (२७ अस्सू श सं ६) (अज्ञान)

अन्धकूप : विच्च अन्धकूप प्रगटे जोत बिन रंग रूप, कल साची जोत धराए। (६ सावण २००८ बि)

उठ उठ जीव क्यों डुब्बा विच्च अन्धकूप, ज्ञान रूप गुर चरन लाग उपजाए। (२७ चेत २००८ बि)

रूप रंग प्रभ सदा अनूप, गुरमख विरले पाया। सृष्ट सबाई अन्धकूप, दिस किसे ना आया। (२८ पोह २०१२ बि) (खूह दा अन्धकार)

अमृत : जिस ने रस अमृत दा पीआ। देह सुखाली निर्मल है जीआ। इस अमृत दी एह वड्डिआई। पसू परेतों देव बणाई । एस बूंद दी कोई ना जाणे सार। जिन्न पीती सो उतरया पार । इक्क बूंद चातरक पावे। होए शांत हरि गुण गावे। अमृत सतिगुर आप बणाया। महाराज शेर सिँघ रसनी लाया। रसना आपणी नाल लगाया। मनमुखां तों गुरसिख बणाया। (१७ भादरों २००६ बि)

ईश्वर बिना ना अमृत बरखे। झूठा पापी आप है परखे। ऐस वासते खेल रचाया। इस ने अमृत दा माण गवाया। जो पीवे अमृत अमर पद हो जावे। जूठयां झूठयां सिर खेह पवावे। कोई ना देवे अमृत बणा के। महाराज शेर सिँघ कहे सुणा के। (१७ भादरों २००६ बि)

सदा सुहेला निर्मल जीआ। अमृत नाम महांरस पीआ। सोहँ शब्द ज्ञान गुर दीआ। (१७ मध्घर २००६ बि)

हरि का भेव समझ तों नयार, लेखा लेख ना कोई जणाईआ। विष्न अंदर ब्रह्म धार, शब्दी शब्द टिकाईआ। शब्द कँवल शब्द गुलज़ार, शब्द फूल फूल समाईआ। शब्द पंखड़ी आए बहार, शब्द वेखे साचा शहनशाहीआ। शब्द रूप अपर अपार, रेख रंग ना कोई जणाईआ। शब्द पिता शब्द माता शब्द बणे सुत दुलार, शब्द विष्नूं घाड़त लए घड़ाईआ। शब्द अमृत शब्द रस शब्द अंदर जाए वस, शब्द शब्द करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी एका हरि, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे बैठा चढ़, तख़त निवासी एका सच्चा शहनशाहीआ। (२६ पोह २०१७ बि)

जन भगतो प्रभू दी भुल्लयो कदे ना बाणी, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग चढ़ाईआ। सति धर्म दी रक्खयो याद निशानी, कूड़ अपराध ना कोई कमाईआ। तुहाढ़ा आत्म जोत नुरानी, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। खेल वेखणा दो जहानी, लोक परलोक खुशी मनाईआ। अमृत जल पीणा ठंडा पाणी, निझ आत्म रस चखवाईआ। तुहाढ़ी सतिगुर दवारे मनज़ूर सदा कुरबानी, जे मन दी मनसा दिउ मिटाईआ। तुहाढ़ी चढ़दी सदा जवानी, बुढेपा परत कोई ना आईआ। मिले वड्डिआई विच्च चार खाणी, चारों कुण्ट होए रुशनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क तकाईआ। (६ माघ शहनशाही सम्मत १)

नाम अमृत बाणी सतिगुर प्यार, दूजी धार ना कोई वखाइंदा । अंदरे अंदर करे गुफ़तार, गुफ़त शुनीद खेल वखाइंदा। करे खेल आप करतार, करनी आपणी आप जणाइंदा। दर दरवेश बण भिखार, हरि अलक्ख निरञ्जण अलख जगाइंदा। भगत भगवन्त खेल नयार, निरगुण सरगुण आप खलाइंदा। सच्चा नाद वज्जे धुनकार, रुण झुण आपणी आप समझाइंदा। सड़क कन्ढ़े बैठे ख़बरदार, बेख़बर ख़बर आप पुचाइंदा। इस तों परे ना कोई करतार, सच दुआरा ना कोई वडिआइंदा। जिस अन्तर इक्क अधार, तिस मंत्र नाम सुणाइंदा। बाणी अमृत करे पुकार, गुरमुखां राह तकाइंदा । बिन भगतां करे ना कोई शिंगार, सच रूप ना कोई वटाइंदा। तख़त निवासी एकँकार, निरगुण आपणी दया कमाइंदा। बेवस हो के डिगा मूंह दे भार, आपणा बल ना कोई जणाइंदा। देवणहार इक्क दातार, दाता दानी आप अखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा।

अमृत बरखा गुरसिख अंदर, मनमुख अगनी अग्ग जलाईआ। अमृत बरखा गुरसिख मन्दर, मनमुख धूंआंधार रखाईआ। अमृत बरखा गुरसिख तेरी डूंघी कंदर, मनमुख बैठे मुख छुपाईआ। अमृत बरखा तोड़े जंदर, त्रै धातू ताला रहण ना पाईआ। अमृत बरखा फुल फलवाड़ी महकाए काया खण्डर, पत पत डाल़ी तन महकाईआ। अमृत बरखा मूरछा करे मन बन्दर, उठ उठ ना दह दिश धाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत बरखा दए समझाईआ। अमृत बरखा आत्म रस, गुरमुख विरला पाइंदा। सतिगुर पूरा देवे हस्स हस्स, आपणा भंडारा आप वरताइंदा। आपणी हत्थीं कर किरपा गुरसिख तेरे अंदर देवे रक्ख, फेर बाहर ना कोई कढाइंदा। आपणे परदे देवे ढक, जगत पर्दा ना कोई पाइंदा । अमृत बरस आप होए वस, आपणा रस आप चखवाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत बरखा आपे लाइंदा।

अमृत बरखा निझर धार, झिरना आप झिराईआ। कँवली कँवल पए फुहार, बूंदी बूंद बन्द टपकाईआ। सुरती मौले खिड़े गुलज़ार, बसन्ती रुत्त आप बणाईआ। भौरा गूंजे आप निरँकार, कली कली वेख महकाईआ। गुरसिख तेरी अमृत बहार, तेरी काया अंदर सोभा पाईआ। लक्ख चुरासी नित नवित्त छिआनवे करोड़ मेघला बरसे आपणी धार, सांत किसे हत्थ ना आईआ। गुरसिख चातरक एका बूंद स्वांती मंगे एका वार, पी पी पी पीआ आपणा लए मनाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन अमृत मेघ बरसाईआ। अमृत मेघ ठंडा पाणी, गुर सतिगुर आप बरसाइंदा। सुरती मिलाए शब्द हाणी, दोहां विचोला आप हो जाइंदा। आप सुणाए आपणी अकथ्थ कहाणी, जगत कताब ना कोई

पढ़ाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुरान, जीव जंत जस गौण शाह सुल्तानी, हरि का नाउँ शहनशाह आप अखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अमृत भंडारा एका भर, अमृत मेघ आप बरसाइंदा। (२२ सावण २०१८ बि)

गुर अवतार पीर पैगम्बर चरनीं ढठ्ठे, आपणा माण मिटाईआ। वेखो खेल पुरख समरथे, हरि करता आप कराईआ। भगत सुहेले कर के कट्ठे, धुर दी सेव लगाईआ। अमृत अमिउँ रस रहे झट्टे, सोहणी बरखा लाईआ। सति रहे ना किसे तीर्थ तट्टे , सर सरोवर ख़ाली दए कराईआ। कलिजुग अन्त अख़ीरी माण इक्क दवारे रखे, दूजा रहण कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगम्मी खेल आप खलाईआ।
अठसठ तीर्थ आवण भज्जे, आपणा पन्ध मुकाईआ। असां चरन चुम्मणे सज्जे खब्बे, दोवें रस वखाईआ। साडी लोकमात विच्चों मुक गई हदे, लेखा रहण कोई ना पाईआ। इक्को हुक्म सूरे सर्बग्गे, सभ ने मन्नणा थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी आप कमाईआ।
अमृत कहे वेखो मेरा पैंदा मुल्ल, क़ीमत हरि हरि आप चुकाईआ। मेरा जन्म हो गिआ भगतां दी विच्च कुल, दूजा पिता ना कोई अखवाईआ। जिस दे लग जावां नाल बुल्ल, अन्तर आत्म रस दिआं बणाईआ। कँवल नाभी खिले सच्चा फुल, पंखड़ीआं आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी रिहा बणत बणाईआ।
अमृत किहा मैं आया ओस कन्ढे, जिस दा किनारा इक्क दरसाईआ । अगे पाए भगतां वंडे, दूजा हत्थ ना कोई लगाईआ। जिन्नां दे सीने होए ठंडे, अगनी अग्ग बुझाईआ। अबिनाशी करता इन्नां दी मन्ने, चले सद रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ।
अमृत कहे मेरे विच्च मिलणा मिट्ठा, जिस दी धार अगम्मी नज़री आईआ। मेरा खेल होणा अनडिट्ठा, अनभव प्रकाश रिहा कराईआ । हुक्म दे अबिनाशी अचुता, सेवा साची सच समझाईआ। भगतां सुहौणी साची रुत्ता, पत्त डाल्ली नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ।
अमृत कहे मैं औंणा ओस बाटे, जिस दा वज़न ना कोई कराईआ । भगतां पूरे करने घाटे, घाटी मंज़ल आप चढ़ाईआ। पुरख अबिनाशी नाल जोड़ने नाते, साक सज्जण इक्क वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी बणत रिहा बणाईआ।
साचा अमृत कहे मैं अंदर वड़ना, जन भगतां डेरा लाईआ। साचे मन्दर चढ़ना, बह बह खुशी वखाईआ। ढोला साचा पढ़ना, इक्को नाम ध्याईआ। जन भगतां अंदर रलणा, आपणा आप मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी साची बणत बणाईआ ।
अमृत कहे मैं जी आयां नूं कहां जी, भगतां आप सुणाईआ। पंज वार मैनूं लैणा पी, पीआ प्रीतम दिआं मिलाईआ। नाता तुट जाए पुतर धी, साक सजण संगी नज़र कोई ना आईआ। लेखा चुकावां साढ़े तिन्न हत्थ सीं, सज्जण सुहेले देवां माण वडयाईआ। सति सतिवादी पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सतिजुग रखाई नींह, साचा मन्दर इक्क सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वडयाईआ।

अमृत कहे मैं कोटन कोट जुगाँ पिछों बणया, नव नौ चार मेरा ध्यान लगाईआ। पुरख अबिनाशी मेहरवान मेहर करया, करनी आपणी विच्च टिकाईआ। अमृत सोहणा जल भरया, एका इक्की रही वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नाल तराईआ।

इक्की कहे एह वस्त अनमुल्ली, साची नज़री आईआ। जिस विच्चों प्रभ भर के इक्क चुली, आपणे मुख लगाईआ। जिस वेले मैं भगतां दी लग्गा बुल्लीं, कोटन बुल्ले बैठण सीस निवाईआ। भाग लगावां ओस कुल्ली, जिस कुल दा मालक कुल्ल अखवाईआ। जे सिखी पिच्छे रहे भुल्ली, अगे मार्ग इक्क वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादी शब्द असूली, पिछली कहाणी मामूली रिहा वखाईआ। (२७ पोह २०२१ बि)

अमृत फल : दास होए जो गुर दर आया। साचा नाउँ अमृत फल पाया।(५ जेठ २००८ बि)
साध संगत इक्क डालु कर, अमृत फल सोहँ शब्द प्रभ लाया। (१७ हाढ़ २००८ बि)
अमृत फल गुरचरन सेवा। कलिजुग गुरसिख उत्तम मेवा। (६ सावण २००८ बि)
रक्ख चित पारब्रह्म, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सोहँ शब्द मुख लगावे गुरसिखां अमृत फल। (२ माघ २००६ बि)
प्रभ अबिनाशी सज्जण सुहेला। गुरमुखां अमृत फल खवाए सोहँ साचा केला। (२८ चेत २०११ बि)

अमृतसर : काया मन्दर अमृतसर, हरि हरि रचन रचाईआ। (२ भादरों २०१६ बि)

अमृत वेला : अमृत वेला आत्म अन्ध, अज्ञान अन्धेर मिटाया । नौं दवारे कीते बन्द, प्रभ दसवां आप खुलाया। (२६ पोह २०१२ बि)
अमृत वेला आत्म दात, मानसरोवर कन्ढा ए। गुरमुख साचा पारजात, घर साचे पई वंडा ए। दिवस रैण रहे परभात, लेखा चुके जेरज अंडा ए। अंदर मन्दर मिट्टी अन्धेरी रात, मिल्या अमृत सीतल ठंडा ए। काया सीतल सांतक होई स्वांत, लोकमात ना आई कंडा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, शब्द धारा जन वणजारा विच्च संसारा आपे पाई साची वंडा ए। (२६ पोह २०१२ बि)
सतिगुर आया चल के पातण, पतण वेखे गुरसिख राहीआ। ना कोई संध्धया ना कोई आथण, सरघी सवेरा ना कोई जणाईआ। अमृत वेला हरि का दरस अठ्ठे पहर गुरसिख आखण, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। (२१ फग्गण २०१७ बि)

अमृत वेले गुर अमृत बरखे, गुरसिखां दे मुख चवाए। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, तपत काया सीतल हो जाए। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, सोहँ शब्द नाम दिवाए। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, सच सुच्च जणाए। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, पसू परेतों कर देव बहाए। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, जन्म जन्म दे पाप गुआवे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, जम दूत कोई नेड़ ना आवे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, साध संगत गुर माण दवावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, तरन तारन समरथ अखवावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, पापी

अपराधी जगत तरावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, गुण निधान घर लेख लिखावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, ब्रह्मा विष्न महेश सभ सरनी लावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, शिव गणेश सभ सीस झुकावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, करोड़ तेतीस सदा बिललावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, बिन गुर मुकत ना कोई करावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, आप अमर जीअ अमर करावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, जोतों जोत आ जीव जगावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, रस अनूठा मुख चवावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, धरत धवल आकाश हिलावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, भय भयानक विच्च आण तरावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, भगत जनां दी पैज रखावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, साध सन्त गुरचरनीं लावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, गुरसिखां नूं माण दवावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, थिर घर दी सोझी पावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, अज्ञान अन्धेर परे हटावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, जोत ज्ञान जीव जगावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, पर्दा खंभ परे हटावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, विच्चों आपणा आप जणावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, लोभ मोह हँकार गवावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, मति मन बुद्धि प्रगटावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, झूठी देह कंचन हो जावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, सोहँ दान रिदे दवावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, हँकारीआं नूं चरन निवावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, सोहँ शब्द दी जैकार करावे। अमृत वेले गुर अमृत बरखे, महाराज शेर सिँघ भगत तरावे। (१६ विसाख २००७ बि)

हरि सतिगुर दा अमृत वेला, प्रभ अमृत जाम प्याइंदा। घर वस्सया गुरू गुर चेला, गुर चेला रंग रंगाइंदा। दीन दयाल कराया मेला, मिल आपणा संग निभाइंदा। भगत भगवान वक्त सुहेला, सहज सहज गुण गाइंदा। वसणहारा सदा नवेला, आपणी कल धराइंदा। वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी कंदर बेला, समुंद सागर फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाइंदा।

अमृत वेला इक्को रंग, अमरापद वडयाईआ। निरगुण सरगुण बणया संग, सगला संग निभाईआ। दर दरवाज़ा अंदर लंघ, साची बणत बणाईआ। पूरब लेखा चुके पन्ध, दूर दुराडी वाट मुकाईआ। अज्ञान अन्धेरा मिटे अन्ध, हरि जोत नूर रुशनाईआ। अमृत वेले उठ के हरिभगत गाए साचा छन्द, सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरी वडयाईआ। अठ्ठे पहर रहे अनन्द, नाम खुमार चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वडयाईआ।

अमृत वेला अमर रक्ख, आत्म परमात्म आप खुल्लाइंदा। जागत सोवत मार्ग दस्स, इक्को राह वखाइंदा। भगत भगवान अन्तर वस, गृह मन्दर सोभा पाइंदा। सच सुहञ्जणा देवे रस, अंमिउँ रस आप चवाइंदा। शब्द अनादी गाए जस, ढोला राग सुणाइंदा। मेल मिलावा हस्स हस्स, आपणे अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी आप कमाइंदा ।

अमृत वेला आत्म धार, परमात्म दए वडयाईआ। शब्द सरूपी सच प्यार, बिन रंग रूपी आप कराईआ। वसणहारा ठांडे दरबार, घर सांतक सति कराईआ। लेखा जाण अंदर बाहर, गुप्त ज़ाहर पर्दा लाहीआ। वेखणहार सोलां शिंगार, सोलां इच्छया पूर कराईआ। पावे

भिच्छया सिरजणहार, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क टिकाईआ।

मेहर नज़र आपणी रक्ख, हरि रक्खक आप अखवाइंदा। होए सहाई नस्स नस्स, औंदा जांदा नज़र ना आइंदा। बाज़ू पकड़े आपणे हत्थ, बल इक्को इक्क जणाइंदा। सन्त सुहेले कर इक्ठ, गुर चेले मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाइंदा।

मेहर नज़र करे करतार, नज़रीआ आप बदलाईआ। सुरत शब्द दा सच प्यार, प्रेमी प्रेमका नाल मिलाईआ। जगत विछोड़ा करे खवार, जोड़ा नाम जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग वखाईआ।

अमृत वेला आत्म रंग, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। निरगुण हो के वसे संग, सरगुण मेल मिलाइंदा। छन्द सुणाए बिन बत्ती दन्द, सोहला राग अलाइंदा। कर प्रकाश अन्धेरा अन्ध, नूरो नूर धराइंदा। जुग जुग दी टुट्टी गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी एका तन्द बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत रुत्त इक्क सुहाइंदा।

अमृत सोहे सुहञ्जणी रुत्त, हरि रुत्तड़ी मात महकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर श्री भगवान कोलों मार्ग रहे पुच्छ, दोए जोड़ वासता पाईआ। नव नौं चार क्यों रिहों लुक, आपणा मुख छुपाईआ। कलिजुग अन्तम केहड़ी धारों गिउँ उठ, सो धार नज़र ना आईआ । भगत दुआरे जा के गिउँ रुक, अग्गे कदम ना कोई टिकाईआ । शेर हो के रिहों बुक्क, भबक आपणे नाम लगाईआ। सन्त सुहेले वेखे आपणे सुत, सुत दुलारे गोद उठाईआ। नाम रंगण रंगे काया बुत्त, काची माटी लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल कराईआ।

अमृत वेले तेरा चाउ घनेरा, चौसठ घड़ी ना कोई वडयाईआ। मेहरवान हो बंने बेड़ा, खेवट खेटा सेव कमाईआ। तुध जिहा होर है केहड़ा, तेरे हत्थ तेरी वडयाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल रिहा जणाईआ।

अमृत वेले मैं की दस्सां, सच सच दृढ़ांइंदा। इक्को वार भगतां अंदर वसां, नित नित दा कलेश मुकाइंदा। आत्म परमात्म निरगुण नाम रटां, दूजी अलक्ख ना कोई जगाइंदा। प्रेम कर पिच्छे ना हटां, साची रीती आप बंधाइंदा। डूंघे घाउ मेटां फट्टां, पट्टी आपणे नाम बंधाइंदा। सच प्रेम अंदर रत्तां, रत्त आपणी ना कोई रखवाइंदा। जन भगतां नाल पकाए मता, मत पिछली सर्ब भवाइंदा। पुरख अकाल गौणा जस्सा, दूजी सिफ्त ना कोई सालाहिंदा। अमृत देणा इक्को रसा, निझर धार वहाइंदा। सच दुआरे कराए कमरकसा, पल्लू आपणी गंढ पवाइंदा। दो जहान फिरे नट्ठा, बण पान्धी फेरा पाइंदा। राग सुणे ना किसे कोलों भट्टां, जन भगतां नाद वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाइंदा।

अमृत वेले तेरा मार्ग सौखा, सो पुरख निरञ्जण आप जणाईआ। अग्गे लेखा चुके औखा, औखी घड़ी ना कोई रखवाईआ। दीन दयाल स्वामी आपे पहुंचा, तेरी आसा पूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम जपण दी साची रीती, इक्को वार दरसाईआ।

अमृत वेले हरि भगत उठौणा, देवणहार वडयाईआ । पंज वार नाम जपौणा, पंच परपंच मिटाईआ। हरिमन्दर हरि आप सुहौणा, सच सिँघासण डेरा लाईआ। निज नेत्र जन दर्शन पौणा, पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक्क दृढ़ाईआ।

पंज वार शब्द जैकार, जै जैकार कराईआ। गुरमुख नेत्र सके ना कोई उघाड़, नैण अक्ख बन्द कराईआ। अन्तर आत्म करे प्यार, लिव इक्को इक्क लगाईआ। चरन धूढ़ी मंगे छार, मस्तक टिक्का चरन कँवल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए जणाईआ।

गुरमुख नेत्र कदे ना खोल्हे, हरि साचा सच जणाइंदा। पंज जैकारा रसना बोले, धुर दी धार बंधाइंदा। अंदर नज़री आए जो बैठा ओहले, पर्दा आप उठाइंदा। उलटा करे नाभ कँवले, अमृत धार वहाइंदा। सुरती शब्दी आपे मौले, हरि मौला कार कमाइंदा। जन भगतां भार करे हौले, सिर आपणे भार उठाइंदा। लेखे लाए उप्पर आए धौले, धरनी धरत धवल भगतां नाल सुहाइंदा। सभ दे पूरे करे कौले, पिछली कीती याद कराइंदा। जिस दे गुर अवतार पीर पैगम्बर पौंदे गए रौले, खाणी बाणी नाद सुणाइंदा। सो साहिब सतिगुर दीन दयाल अगम्म ठाकर निरगुण बोले, निरवैर राह चलाइंदा। सच दुआरा इक्को खोल्हे, दर दरवाज़े बणत बणाइंदा । गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्त चढ़ाए आपणे डोले, फड़ बाहों अंदर लंघाइंदा। अमृत वेला गाइण सोहले, सो पुरख निरञ्जण खुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाइंदा।

अमृत वेला सोहणा लग्गा, सारे रहे जस गाईआ। श्री भगवान सूरा सर्बग्गा, शहनशाह इक्को नज़री आईआ। दो जहानां दे के सद्दा, दर आपणे लए बहाईआ। प्रेम प्यार अंदर मधा, मसती आपणे नाम चढ़ाईआ। सच प्रीती अंदर बज्झा, करे खेल सच्चा शहनशाहीआ । सच सिँघासण बह के सजा, तख़त निवासी डेरा लाईआ। जन भगतां सेवा कर अजे ना रज्जा, आपणी आशा होर वधाईआ। सदा फिरे सज्जा खब्बा, अग्गा पिछा वेख वखाईआ। करे खेल बुढ्ढा नढ्ढा, रूप रंग नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत वेले दए वड्डिआईआ।

अमृत वेले तेरा वेला सोहणा, प्रभ सोहणी रुत्त सुहाईआ। जन भगतां जोगा होणा, दूसर मिले ना कोई वडयाईआ। गुरमुखां चुक्के रोणा धोणा, नेत्र नैण नीर ना कोई वहाईआ। अमृत फल इक्को बोणा, शब्द किआरी आप महकाईआ। सोवत जागत पंज वार हरि का नाम गौणा, भुल्ल कदे ना जाईआ। आत्म सेजा पलंघ विछौणा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। कमलापाती घर चल के औणा, आदि निरञ्जण सच्चा शहनशाहीआ। दीआ बाती इक्क जगौणा, तेल वट्टी ना कोई पाईआ। गुरमती बह बह कन्त मनौणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। चरन कँवल ध्यान रखौणा, चरन चरनोदक मुख चवाईआ। हउमे हंगता बुरज ढौणा, निवण सो अक्खर करे पढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार नाम वडयाईआ।

नाम वड्डिआई हरि करतार, इक्को इक्क जणाइंदा। वस्त अगम्म दए थार, थिर घर आप टिकाइंदा। हरि साहिब दा हक़ प्यार, हकीकत मेल मिलाइंदा। लाशरीक सांझा यार, शिरकत सर्ब गवाइंदा। पीर पैगम्बर वेखणहार, गुर अवतार भेव चुकाइंदा। चार वरन दा इक्क जैकार, साचा सोहला आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम अमृत जाम प्याइंदा।

नाम अमृत जाम प्याऊंगा। जन भगतां वेख वखाऊंगा। सुख इक्को घर वखाऊंगा। मुख उजल आप कराऊंगा। गोदी चुक्क तख़त बहाऊंगा। दर दरवेश आप अखवाऊंगा। बण सेवक सेव कमाऊंगा । फड़ बाहों आप उठाऊंगा। जग भुल्लयां राहे पाऊंगा। बेनकाहे आप परनाऊंगा। सहज सुभाए खेल खिलाऊंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अमृत वेला इक्क वड्डिआऊंगा।

अमृत वेला सोहेगा। प्रभ भगतां जोगा होएगा। हरिजन लोकमात ना सोएगा। दुरमत मैल पापां धोएगा। वेले अन्त कदे ना रोएगा । श्री भगवान चरन चरनोधक मुख चोएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बीज सच्चा इक्को बोएगा।

बीज सच्चा इक्क बजावांगा। भगत बूटा मात लगावांगा। फुल्ल फलवाड़ी आप महकावांगा। कर कर दारी सेव कमावांगा। लक्ख हज़ारी लेख चुकावांगा । सवा लक्ख दा माण मिटावांगा। कोटन कोटां विच्चों गुरमुख विरला आप उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला आप मिलावांगा।

सवा लक्ख दा तुटे माण। इक्क लक्ख ना कोई निशान। प्रतक्ख हो आप भगवान। भगतां देवे सच्चा दान। अन्तर आत्म कर परवान। गोबिन्द मेला विच्च जहान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नौजवान।

इक नाल ना लक्ख लड़ाऊंगा। असंख असंखां विच्चों गुरमुख इक्क उपजाऊंगा। बणा बणत मिला कन्त हरि भगवन्त रंग रंगाऊंगा। महिमा अगणत खेल बेअन्त, अभेद धार जणाऊंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा इक्क रखाऊंगा।

साची सेवा आप कमावांगा। जन भगतां आप उठावांगा। अमृत वेला अठ्ठे पहर जणावांगा। बण सज्जण सुहेला कूड़ी क्रिया कहर मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमावांगा। ..... (१६ चेत २०२० बि)

चारों कुण्ट अन्धेरी राती, साचा चन्द ना कोई चमकाईआ। अमृत वेला ना किसे प्रभाती, प्रभ मिलण कोई ना आईआ। निरगुण जोत जगे ना बाती, कमलापाती ना कोई वडयाईआ। साची मन्ने कोई ना आखी, आख़र प्रभ नूं गए भुलाईआ। (२१ चेत श सं ४)

अमृत वेले प्रगट जोत, प्रभ अमृत मेघ बरखाया। अमृत वेले प्रगट जोत, साचा शब्द सुणाया। अमृत वेले प्रगट जोत, अनद बिनोदी प्रभ दरस दिखाया। अमृत वेले प्रगट जोत, अमृत वेला सुहाया। अमृत वेले प्रगट जोत, अमृत झिरना विच्च देह झिराया। अमृत वेले प्रगट जोत, अमृत साचा कँवल नाभ मुख चवाया। खुल्ले कँवल होए उजिआरा, अमृत साचा प्रभ वरसाया। अमृत वेले प्रगट जोत, प्रभ अबिनाशी विच्च मात दे आया। महाराज शेर

सिँघ विष्नूं भगवान, अमृत साचा गुरसिख मुख चुआया। (१७ सावण २००८ बि)

अमृत वेला आत्म रस, रसना मुख चवीजे। पुरख अबिनाशी राह साचा दस्स, जन भगतां कारज कीजे। गुरमुख साचा नस्स नस्स, प्रभ चरन धूड़ मस्तक लीजे। पुरख अबिनाशी हस्स हस्स, तन मन काया सीजे। हरि हरि हिरदे अंदर वस वस, दरस दिखाए नैण तीजे। शब्द तीर निराला कस कस, सोहँ सो आत्म बीज निराला बीजे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां कराए मात रीझे, अमृत वेला आत्म जोत, ब्रह्म ज्ञान जणाईआ। दुरमत मैल प्रभ कलिजुग धोत, कंचन रंग चढ़ाईआ। लेखा चुक्के वरन गोत, मिले मेल सच्ची सरनाईआ। लक्ख चुरासी रही रोत, ना कोई गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, गुरमुख साचे सन्त दुलारे आप आपणे रंग रंगाईआ।

अमृत वेला आत्म बीज, प्रभ साचा आप बिजाया। शब्द सुनेहड़ा मात भेज, गुरमुख साचे रिहा जगाया। आपे जाणे जोती तेज, निर्मल जोती आप जगाया। जल थल थल जल नौं नौं नेज, सम्मत अठारां वेख वखाया। गुरमुख विरला वेखे जगत भगत शमस तबरेज, सोहँ सो सूली आप चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लहणा देणा पिछला मूल रिहा चुकाया।

अमृत वेला आत्म अन्ध, अज्ञान अन्धेर मिटाया। नौं दवारे कीते बन्द, प्रभ दसवां आप खुलाया। जिस जन गाया बत्ती दन्द, सति पुरख निरञ्जण घर में पाया। लोकमात चढ़या साचा चन्द, सतिजुग तेरा सति उपजाया। दिवस रैण अठ्ठे पहर रक्खे परमानंद, हरि विच समाया। खुशी कराए बन्द बन्द, छब्बी पोह जिस दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जगत दवारा जूठा झूठा गंद तजाया।

अमृत आत्म नीर, प्रभ एका धार चलाईआ । गुरमुखां देवे शब्द सीर, सच रसना नाल प्याईआ। अठ्ठे पहर धीरन धीर, हउमे रिहा पीड़ गवाईआ। लोकमात प्रभ बंने बीड़, ना कोई वेखे हसत कीड़, ऊँचां नीचां भेव ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे सन्त दुलार, पारब्रह्म कर विचार, जोत निरञ्जण मात अकार, शब्द नेत्र अंजन जगत शिंगार, किरपा करे दर्द दुःख भय भंजन, शब्द हथोड़ा रिहा मार।

प्रगट होया साचा सज्जण, दो जहानी मीत मुरार। जन भगतां आया पड़दे कज्जण, एका देवे नाम अधार। लक्ख चुरासी जूठे झूठे भाण्डे भज्जण, आपे भन्ने भन्नणहार। दर दर घर घर राज राजान शाह सुल्तान तजण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, चार कुण्ट नौं खण्ड पृथ्मी कर रिहा विचार।

अमृत वेला आत्म रस, काया चोली आप चढ़ाईआ। गुरमुख तेरा साचा संग, प्रभ साचा शब्द बणाईआ। सोहँ डोरी जगत पतंग, प्रभ उनीं अस्सू डोरी पाईआ। अमृत आत्म वगे गंग, पंझी पोह प्रभ अबिनाशी अंदर हो लेखे लाईआ। सोहँ सो रसना आप जपाईआ । बेमुख जीव ना जानण को, गुरमुख साचे सन्त सुहेले लोकमात बांह धर सरहाणे जाणा सौं, प्रभ लक्ख चुरासी देवे फंद कटाईआ। जन्म जन्म दा बीजिआ बीज मिल्या फ़ल प्रभ चरन दवारे अगे हो, लहणा देणा कज़ रिहा चुकाईआ। नौं दवारे रहे रो, जन भगतां आत्म दर वज्जी वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, छब्बी पोह गुर संगत देवे मात वडयाईआ।

अमृत वेला आत्म रस, निझर धार वहाईआ। जोत प्रकाश कोटन रव सस, होए प्रकाश सहज सुभाईआ। गुर संगत तेरी सेवा होई जगत बस, प्रभ आत्म मेवा फ़ल इक्क खवाईआ। वेले अन्तम पकड़ उठाए नस्स नस्स, दूर नेड़े ना कोई जणाईआ। जगत निराला राह दस्स, पार बिआस खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, त्रैगुण जगत माया मात साचा मन्दर दए बणाईआ।

सोहँ सो विच्च रखाए करामात, देस मालवे मिली वडयाईआ। गुर गोबिन्दे तेरी बिन्दे गुरमुख उपजे पारजात, प्रभ मस्तक टिक्का रिहा लगाईआ। ना कोई वेखे जात पात, ऊँचां नीचां आपणी गोद उठाईआ। एका शब्द देवे साची दात, धुरदरगाही लै के आईआ। चरन प्रीती बंन्हे नात, ना कोई सके मात तुड़ाईआ। प्रगट होया पुरख बिधात, दो जहानां एका राह चलाईआ। जन भगतां मिल्या प्रभ कमलापात, छब्बी पोह रुत्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, पारब्रह्म अबिनाशी अचुत आप आपणी बणत बणाईआ।

अमृत वेला आत्म राग, प्रभ साचा इक्क सुणाइंदा। गुरमुख सोया गिआ जाग, भाग काया तन लगाइंदा। मिल्या मेल कन्त सुहाग, हउमे दुःखड़ा रोग गवाइंदा। शब्द बंन्हे तन साचा ताग, लक्ख चुरासी फंद कटाइंदा। आप बुझाए तृसना आग, धीरज धीर इक्क धराइंदा। हँस बणाए फड़ फड़ काग, मस्तक धूढ़ी चरन छुहाइंदा। दिवस रैण जन रहे वैराग, अन्तम लेखा मात चुकाइंदा। मिल्या मेल कन्त सुहाग, गुरमुख साचा साची नारी आत्म सेजा कर प्यार आपे आप बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, जोती जामा भेख धर, जुगाँ जुगाँ दे विछड़े यार, बिदर सुदामा मीत मुरार आप आपणा लड़ फड़ाइंदा।(२६ पोह २०१२ बि)

सतिगुर आया चल के पातण, पतण वेखे गुरसिख राहीआ। ना कोई संध्या ना कोई आथण, सरघी सवेरा ना कोई जणाईआ। अमृत वेला हरि का दरस अठ्ठे पहर गुरसिख आखण, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। हरि संगत करे बन्द ख़लासन, बन्दी तोड़ आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलिजुग तेरी अन्तम वर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन होए आप सहाईआ। (२१ फग्गण २०१७ बि)

श्री भगवान दस्से आप, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रिहा वखाईआ। उठ के वेखो कोई ना जपे अन्तर जाप, तुट्टी लिव ना कोई लगाईआ। दिने राती करन पाप, अमृत वेले उठ के रसना जिह्वा प्रभ नूं शरमिंदा रहे कराईआ। रसना कहण तूं पाकी पाक, अंदरों पलीती बाहर ना कोई कढ्ढाईआ। बाहरों गुरू दे बणदे सारे साक, अंदरों ठग्गी रहे कमाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी अंदर वड़ के सभ नूं रिहा झाक, घर घर बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चौथे जुग लेखा रिहा मुकाईआ। (८ अस्सू २०२० बि)

नारद कहे वाहवा मेरे प्रभू रंग, रंगले दिआं जणाईआ। अमृत वेला ढाई तों पंज, तेरे चरन दवारे आपणी खुशी मनाईआ। (२१ फग्गण शहनशाही सम्मत ४)

शब्द गुरू कहे तुहाढ्ढी आत्मा जिस दा परमात्मा दोहां दा सच्चा साथण, साथी इक्क अखवाईआ। जन भगतो तुसां पिछली कीती आपणे अंदरों कढ्ढुणी अमृत वेले सारयां ने कर लैणी दातन, पिछला लेखा रहे ना राईआ। (१ चेत श सं ५)

एह उह : एह उह जो असुत्ते प्रकाश करांदा रिहा। एह उह जो सो पुरख निरञ्जण रूप वटांदा रिहा। एह उह जो हरि पुरख निरञ्जण नाम धरांदा रिहा। एह उह जो एकँकार अखवांदा रिहा। एह उह जो आदि निरञ्जण नूर प्रगटांदा रिहा। एह उह जो अबिनाशी करता भेस दरसांदा रिहा। एह उह जो श्री भगवान सच निशान झुलांदा रिहा। एह उह जो पारब्रह्म निरगुण रूप अखवांदा रिहा। एह उह जो जोती जोत डगमगाँदा रिहा। एह उह जो सचखण्ड दवार वसांदा रिहा। एह उह जो सच सिँघासण सोभा पांदा रिहा। एह उह जो शाहो भूप वड वडिआंदा रिहा। एह उह जो आदि आदि आपणे सीस जगदीस ताज सुहांदा रिहा। एह उह जो मुकामे हक़ डेरा लांदा रिहा। एह उह जो निरगुण जलवा नूर डगमगाँदा रिहा। एह उह जो लाशरीक नज़र आपणी पांदा रिहा। एह उह जो आपणी कल आप वखांदा रिहा। एह उह जो निरगुण निरगुण मेल मिलांदा रिहा। एह उह जो नार कन्त रूप वटांदा रिहा। एह उह जो दाई दाया बण सेव कमांदा रिहा। एह उह जो जननी जन सुत दुलारा शब्दी शब्द बणांदा रिहा। एह उह जो लाल अनमुलड़ा आपणी गोद उठांदा रिहा। एह उह जो धुर फ़रमाना इक्क अलांदा रिहा। एह उह जो विश्व विष्नूं रूप वटांदा रिहा। एह उह जो अमृत झिरना आप झिरांदा रिहा। एह उह जो कँवल नाभ उलटांदा रिहा। एह उह जो ब्रह्म जोत प्रगटांदा रिहा। एह उह जो ब्रह्म सरूप वखांदा रिहा । एह उह जो सुंन अगम्म रहांदा रिहा। एह उह जो शंकर रंग रंगाँदा रिहा। एह उह जो सहँसर मुख फनिंदर समझांदा रिहा। एह उह जो त्रैगुण माया बंधन पांदा रिहा। एह उह जो पंज तत्त घाड़न घड़ांदा रिहा। एह उह जो धुर संदेश सुणांदा रिहा । एह उह जो गणपत गणेश बणांदा रिहा। एह उह जो विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाँदा रिहा। एह उह जो दर दरवेश अखवांदा रिहा। एह उह जो दरगाह साची सोभा पांदा रिहा। एह उह हुजरा हक़ वडिआंदा रिहा। एह उह जो रूप रंग रेख ना कोई जणांदा रिहा। एह उह जो सच टकसाल बणांदा रिहा। एह उह जो ब्रह्मण्ड खण्ड रचांदा रिहा। एह उह जो लोआं पुरीआं आसण लांदा रिहा। एह उह जो मण्डल मंडप सुहांदा रिहा। एह उह जो रव सस सूरज चन्द चमकांदा रिहा। एह उह जो धरत धवल आकाश पृथ्मी नाल मिलांदा रिहा। एह उह पवण पवणी मेल मिलांदा रिहा। एह उह दो जहानां रूप धरांदा रिहा। एह उह चौदां लोकां वंड वंडांदा रिहा। एह उह आदि जुगादि जुग जुग आपणा रचन रचांदा रिहा। एह उह ब्रह्म ब्रह्मादि समझांदा रिहा। एह उह नाद अनाद अनहद राग सुणांदा रिहा। एह उह चारे खाणी वंड वंडांदा रिहा। एह उह अंडज जेरज उत्भुज सेतज रंग चढ़ांदा रिहा। एह उह चारे बाणी परा पसन्ती मद्धम बैखरी आप समझांदा रिहा। एह उह विष्न ब्रह्मा शिव राह जणांदा रिहा। एह उह चारे वेदां रंग लगाँदा रिहा। एह उह आपणा सच संदेस अलांदा रिहा। एह उह ब्रह्मा सुत सन्त कुमार उठांदा रिहा। एह उह बराह अपणीआं उंगलीआं नचांदा रिहा। एह उह यगै पुरुष हुक्म सुणांदा रिहा। एह उह हाव ग़रीव वंड वंडांदा रिहा। एह उह नरैण रूप जणांदा रिहा। एह उह कपल मुन वडिआंदा रिहा। एह उह दता त्रै बणत बणांदा रिहा। एह उह रिखप देव अंग अंगीकार करांदा रिहा । एह उह पिरथू पृथ्मी विच्चों मथन कर वखांदा रिहा। एह उह मतस आपणा बाल बणांदा रिहा। एह उह कछप सेव लगाँदा रिहा। एह उह धनंतर राह जणांदा रिहा। एह

उह मोहणी रूप वटांदा रिहा। एह उह हँस हँसा मोती चोग चुगाँदा रिहा। एह उह बावन खेल वखांदा रिहा। एह उह नर सिँघ नाउँ जपांदा रिहा। एह उह हरी हरि आपणी धार जणांदा रिहा। एह उह नर नरायण आपणी अक्ख खुल्हांदा रिहा। एह उह परसराम चरन ध्यान जणांदा रिहा। एह उह दसरथ बेटा राम लोकमात प्रगटांदा रिहा। एह उह वेद व्यास पुरान अठारां समझांदा रिहा। एह उह कृष्न त्रिलोकी नाथ सुहांदा रिहा। एह उह गीता ज्ञान जणांदा रिहा। एह उह अठारां ध्याए वंड वंडांदा रिहा। एह उह मूसा मूंह दे भार सुटांदा रिहा। एह उह ईसा पित पूत बणांदा रिहा। एह उह मुहम्मद चौदां तबकां विच्च फिरांदा रिहा। एह उह पीर पैगम्बरां सबक पढ़ांदा रिहा। एह उह निरगुण धारों निरगुण नूर धरांदा रिहा। एह उह सरगुण संग निभांदा रिहा। एह उह नानक अंग लगाँदा रिहा। एह उह सचखण्ड दवार वखांदा रिहा। एह उह महल्ल अट्टल रुशनांदा रिहा। एह उह साचे तख़त सोभा पांदा रिहा। एह उह सीस जगदीस ताज सुहौंदा रिहा। एह उह सच संदेश नर नरेश सुणौंदा रिहा। एह उह कोटन कोट नाम दृड़ौंदा रिहा । एह उह कोटन कोट राग जणौंदा रिहा। एह उह कोटन कोट वैराग उपजौंदा रिहा। एह उह कोटन कोट सुहाग हंडौंदा रिहा । एह उह कोटन कोट शब्द रंग चढ़ौंदा रिहा। एह उह कोटन कोट भगत भगवन्त तरौंदा रिहा। एह उह कोटन कोट सन्त जगौंदा रिहा। एह उह कोटन कोट गुरमुख समझौंदा रिहा। एह उह कोटन कोट गुरसिख पत रक्ख, सिर आपणा हत्थ टिकौंदा रिहा। एह उह कोटन कोट जुग उठौंदा रिहा। एह उह कोटन कोट मनवन्तर मिटौंदा रिहा। एह उह कोटन कोट मंत्र समझाउँदा रिहा। एह उह कोटन कोट गगन गगनंतर खोज खुजौंदा रिहा। एह उह कोटन कोट बणतर बणत बणौंदा रिहा। एह उह कोटन कोट खेड़े वसदे ढौंदा रिहा। एह उह कोटन कोट वेस अनेक धरौंदा रिहा। एह उह शब्दी डंक वजौंदा रिहा। एह उह दवार बंक सुहौंदा रिहा। एह उह राउ रंक समझौंदा रिहा। एह उह जोती जोत जगौंदा रिहा। एह उह नानक निरगुण विचोला बणौंदा रिहा। एह उह सति नाम ढोला सुणौंदा रिहा। एह उह सति नाम जपौंदा रिहा। एह उह ओअं आपणी कल जणौंदा रिहा। एह उह अछल अछॅल खेल खलौंदा रिहा। एह उह रल मिल सखीआं मंगल गौंदा रिहा। एह उह शरअ शरीअत वंड वंडौंदा रिहा। एह उह दीन मज़हब ज़ात पात बणत बणौंदा रिहा। एह उह आत्म परमात्म खेल खलौंदा रिहा। एह उह पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रूप धरौंदा रिहा। एह उह ईश जीव राह जणौंदा रिहा। एह उह आत्म जोती नूर धरौंदा रिहा। एह उह अनहद नाद सुणौंदा रिहा। एह उह आत्म जाम प्यौंदा रिहा। एह उह बजर कपाट तुड़ौंदा रिहा। एह उह पंच विकार मिटौंदा रिहा। एह उह शाह सुल्तानां ख़ाक रलौंदा रिहा। एह उह नाम निधान जणौंदा रिहा । एह उह सच निशान झुलौंदा रिहा। एह उह जुग चौकड़ी मात उलटौंदा रिहा। एह उह गोबिन्द सुत बणौंदा रिहा। एह उह पुरख अकाल आपणा खेल खलौंदा रिहा। एह उह दीन दयाल ठाकर स्वामी ठोकर इक्क लगौंदा रिहा। एह उह आदि जुगादि जुग जुग आपणी वंड वंडौंदा रिहा। एह उह ब्रह्मण्ड खण्ड तेज परचंड चमकौंदा रिहा। एह उह चिल्ला तीर कमान वखौंदा रिहा । एह उह शस्त्र बसतर तन सुहौंदा रिहा। एह उह अस्त्र चक्कर चलौंदा रिहा। एह उह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

निरगुण नूर ज़ाहर ज़हूर चवीआं अवतार अखवौंदा रिहा। (२७ माघ २०१६ बि)

अकाल पुरख अजूनी रहित अखवौण वाला, जोती जोत जोत जग आया। आदि जुगादि जुग जुग आपणा रंग रंगौण वाला, आप आपणा वेस वटाया। खण्ड ब्रह्मण्डां रचन रचौण वाला, नूर नूर ही डगमगाया। ब्रह्मा विष्न शिव नचौण वाला, आप आपणा खेल खिला आया। रव सस चन्न सतार चढ़ौण वाला, आया निरगुण वेस अव्वलड़ा करा आया। चारे विद्या आप पड़ौण वाला, वेद विदातां आप लिखवा आया । करोड़ तेतीसा सेव लगौण वाला, सुरपत राजा इन्द आप उठा आया। अमृत मेघ आप बरसौण वाला, अमृत धार नाल रला आया। जुग चौकड़ीआं आप बनौण वाला, ब्रह्मा मनवन्तर वेख वखा आया। राम राजक रिज़क वी आप अखवौण वाला, नाम भंडार वी भन्न भार आया। गुर पीर अवतार घलौण वाला, जोती जामा धार के विच्च संसार आया। सनक सनंदन सनातन सन्त कुमार बणौण वाला, बराह रूप वी वेख वखौण आया। यगै पुरख दा लेख लिखौण वाला, हाव गरीव वी कर पार लिआया। नर नरायण प्रभ आप अखवौण वाला, कपल मुन ते दत्तात्रै वी आप उठा आया। रिखव देव दी वंड वंडौण वाला, प्रिथू आपणा संग निभा आया। मतसय कछप मिन्दरा चल उठौण वाला, आप आपणा खेल खिला आया। धनंतर वैद वैद अखवौण वाला, मोहणी रूप करके अपर अपार आया। नर सिँघ दर वेस वखौण वाला, हँस हँसा दी चाल चलौण आया। भेखाधारी बल बनौण वाला, आप आपणा रंग रंगौण आया। हरी हरि नरायण पछौण वाला, तन्दन तोड़ ते गज उठौण आया । परसराम ते राम समौण वाला, रावण गढ़ हँकार नूं ढौहण आया । वेद व्यास दरवेस बणौण वाला, अठारां पुरान लिखण लिखौण आया। काहना कृष्न आ नाम धरौण वाला, त्रिलोकी नाथ बण के साचा काहन आया। नाल गोपीआं सगन मनौण वाला, बिदर सुदामा दी बंन के प्यार लिआया। दरोपद लज्जया लाज रखौण वाला, गीता ज्ञान अरजन दृढ़ावण आया। पंचम प्यार ते पंज बणौण वाला, सृष्ट सबाई करन सँघार आया। ईसा मूसा दा मोह रखौण वाला, माया तोड़ के मोह जंजाल आया। मुहम्मद अहिमद अंग लगौण वाला, चौदां तबकां दा खोल़ किवाड़ आया। नूरो नूर जोती डगमगौण वाला, बेऐब परवरदिगार सच खुदा आपणा नाम धरावण आया। कलमा सच दा सच पढ़ौण वाला, अल्ला राणी नूं मात परनौण आया। नानक गुर दा रूप वखौण वाला, निरगुण धार कर प्यार उजिआर नूर नूरो नबी आप टपकौण आया। नाम सति का मंत्र जपौण वाला, सति पुरख आप दातार आया। अञ्जण अंग ला के पार करौण वाला, अंगीकार साचा हरि यार आया। अमरदास तों अमर करौण वाला, अमृत भर प्याला त्यार हरि त्यार आया। रामदास सरोवर नहौण वाला, सर सरोवर आ इक्क वखौण आया। गुरू अरजन नूं बोध अगादि जनौण वाला, शब्द शब्द दी लै के धार आया। हरि गोबिन्द नूं घोड़ी चढ़ौण वाला, मीरी पीरी दा शाह सवार आया । हरि राए नूं हरि रंग रंगौण वाला, रागी आपणा राग नाद वजौण आया। हरिकिशन नूं मेल मिलौण वाला, मेला दो जहान करौण आया। तेग़ बहादर नूं तेग दी धार लगौण वाला, खून रंग के लाल गुलाल आया। गुर गोबिन्द नूं सुत उपजौण वाला, सिँघ रूप हो आप भगवान आया। प्रहिलाद की रक्खया करौण वाला, हरनकसप दा मूल चुकौण आया। बाले धरू नूं गले लगौण वाला,

जंगल जूहां अंदर फेरी पाउण आया। बल राजे नूं पार कराउण वाला, बल धार के आप निरँकार आया। अमरीक दा लहणा चुकौण वाला, चक्कर सुदर्शन विच्च संसार आया। राजे जनक नूं दरस वखौण वाला, खाली भरन फेर भंडार आया। हरी चन्द नूं मेल मिलाउण वाला, तारा राणी दा कर प्यार आया। बिदर सुदामे नूं आप रखौण वाला, नाम देव दा कर जैकार आया। सधना र्तलोचण पार लंघोण वाला, राविदास चमार वी नाल तराउण आया। कबीर साचे घर मिलाउण वाला, नामे छप्परी आप बनौण आया। सैण भगत भगवन्त अखवाउण वाला, खिमां गरीबी दा वेस वटा आया। गनका पापन नूं पार कराउण वाला, पतित पापी आप करतार आया। अजामल दा लेख लिखाउण वाला, अलख निरजंण आप करतार आया। बद्धक दे फंद कटौण वाला, जामा धार के कृष्न भगवान आया। बालमीक बटवारा समझाउण वाला, नाल लै के शब्द ज्ञान आया। भगतां संग आ सदा बठौण वाला, खाली हत्थ विच्च संसार वखौण आया। लक्ख चुरासी दी बणत बनौण वाला, कर वेस अव्वलड़ा सावल यार आया। धरत धवल जल आप टिकाउण वाला, आकाश प्रकाश रखवान आया। बाशक सेज ते सेज वखौण वाला, विष्नूं रूप आ लेख लिखाउण आया। सहँसर मुख नूं मुख चलौण वाला, वार सहँसर जेहवा आप हिलाउण आया। कलिजुग दी बणत बणौण वाला, लहणा देण आ अन्त चकौण आया। गुरमखां दे मुख मिलाउण वाला, माता कुक्ख तों वखरा आप आया। हरि संगत दे दुःख मिटाउण वाला, आप आपणा दुःख गवा आया। मात कुक्ख नूं सफल कराउण वाला, दस दस मास अंदर फेरा पा आया। उलटे रुख नूं वेख वखाउण वाला, नज़र विच्च ना किसे संसार आया। बूटे सुकदे हरे कराउण वाला, अमृत जल लै के धुर दरबार आया। आप आपणे लेखे लाउण वाला, लेखा लिख के हत्थ सच्ची सरकार आया। आदि जुगादि दे नाम जपौण वाला, सोहँ शब्द दा सच भंडार लिआया। तीनों ताप दे तप नूं लाउण वाला, त्रैगुण दी बंन के धार लिआया। तिन्न ताप दे सार नूं पाउण वाला, साखियात हो के परवरदिगार आया। आप आप नूं आप अखवाउण वाला, धुरदरगाही सच्चा सिकदार आया। राज राजाना नूं राज दवाउण वाला, राज जोग हरि आप कमाउण आया। लोक परलोक हरि आप बणाउण वाला, आपणी बणी नूं आपे ही ढाउण आया। हरि संगत नूं सच सलोक सनाउण वाला, लै के गुण निधान आया। छत्ती रागाँ दे विच्च समाउण वाला, बहत्तर नाड़ ताड़ा वजाउण आया। कागों हँस बणाउण वाला, सच सरोवर वेख वखाल आया। गुरसिखां नूं सिख्या दवाउण वाला, साची सिख्या सिक्खण आप निरँकार आया। सृष्ट सबाई नूं भिच्छया पाउण वाला, मंगण भिच्छया सिखा दे दवार आया। खालक खलक दे विच्च समाउण वाला, ख़ाकी ख़ाक दर ख़ाक अखवाउण आया। सन्तां भगतां नूं दरस कराउण वाला, हरि संगत तेरा दरस करन निरगुण धार जामा सरगुण प्यार आया । कोट काया दे विच्च रचाउण वाला, शब्द घोड़े चढ़ असवार आया । कलगी तोड़ा सीस ते लौण वाला, नीला नीली धारों कर के पार आया। बवंजा बवंजा दी धार चलाउण वाला, बवंजा कर उजिआर आया। बवंजा कलीआं दे नाल निभाउण वाला, बविंजा अंदरों बाहर कराउण आया। बवंजा साल लोकमात हंढाउण वाला कलिजुग अन्तम लुक के विच्च संसार आया। सम्बल नगरी धाम सुहाउण वाला, रूप रंग ना कोई निखार आया। लोक परलोक डंक वजाउण वाला, ब्रह्मा विष्न शिव देवत सुर

कर ख़बरदार आया। सिँघ दीदार नूं दरस वखौण वाला, प्रगट हो संगत विचकार आया। जगत अलामे गुरमुखां दे लाउण वाला, पैहलों आपणा मूंह फटकार आया। गुरमुखां दे भार उठाउण वाला, पैहलों आपणा भार दबा आया। हरि संगत दे बच्चे बचाउण वाला, बच्चे नीआं दे हेठ रखा आया। साढ्ठे तिन्न हत्थ दा मूल चुकौण वाला, सिँघ मनजीते नूं सेवा ला आया। चिट्टा दाग काले उत्ते पाउण वाला, चिट्टी कुल्ली नूं डगमगा आया। नौ दवारे पार कराउण वाला, नौ दरवाजे दरबार सुहा आया। हरि जगदीस नूं आप मिलाउण वाला, सिँघ जगदीस ताई लेखे ला आया। दसम दवारी मेल मिलाउण वाला, सच सिँघासण आसण विछा आया। विछड़े मेल मिलाउण वाला, धुर दरगाही चल के आप मलाह आया। निथावयां थान दिवौण वाला, दरगाह साची साचा धाम बणा आया। जोती जोत दे नाल जगाउण वाला, जोती रूप कर आप निरँकार आया। वरन गोती नूं मेट मिटाउण वाला, पंज तत्त पिंजरा आपणा साड़ आया। मड़ी गोर दे विच्च दबाउण वाला, चाल वक्खरी होर दी होर कर आया। राम नाम ते कृष्न बणाउण वाला, सीता राधा वी नाल रला लिआया। अल्ला नाअरा वी आप अखवाउण वाला, ऐली अल्ला वी इक्क सलाह लिआया। नाम सति दा सति वरताउण वाला, वाहिगुरू फतिह गजा आया। चार वरनां नूं एका धाम बहाउण वाला, एका रूप आप अखवा आया। ब्रह्म पारब्रह्म विच्च मिलाउण वाला, सोहँ शब्द नूं आप पढ़ाउण आया। हरिजन हरिभगत हरिसन्त गुरसिख गुरमुख गुर मिलाउण वाला, मनमुखां नूं करन सवाह आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कलिजुग तेरी अन्तम वर, दरगाह साची दा सच मलाह आया। (२७ माघ २०१५ बि)

इक गल्ल : सतिगुर नानक जणाई इक्क गल्ल, होर हउमें झखणा झाख। जो बावन दस्सी दवारे बल, बिन अक्खरां निरअक्खर धार आख। राम जणाई लंका धार विच्च जल, हनूवन्त समझाया साख । कृष्न भेव खुल्लाया पल, अरजन पर्दा लाह परताख। मूसा ओसे धार विच्च गिआ रल, जिस गल्ल दी होर नहीं कोई शाख। ईसा ओसे मंज़ल पिआ चल, जेहड़ी गल्ल अंदरों गई भाख। मुहम्मद उहो दवारा लिआ मल, जिथ्थे इक्क गल्ल दा यवले ज़ू जमता ज़वी अर्शे नविज़ योज़ू मज़ा रहमते खुदा नूरे निज़ा इक्क अखवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दा मालक धुरदरगाहीआ। नानक गल्ल जगत धार अगम्मी, अक्खर लेख ना कोई बणाईआ। गाई जाए ना किसे पवण स्वामी दमी, रसना जिह्वा ना कोई चतुराईआ । किसे कलम शाही दी धार विच्चों नहीं जम्मीं, काग़ज़ां रंग ना कोई रंगाईआ। जिस दी जोबन जवानी पुराणी नहीं नवीं, नव नौ चार समझ कोई ना पाईआ। उह लिखी जाए ना कदी शास्त्रां वाले पंनी, हरूफ़ां वंड ना कोई वंडाईआ। बध्धी जाए किसे ना कन्नी, हत्थो हत्थ ना कोई टिकाईआ। वसे कदे ना किसे छप्पर छन्नी, जगत दवारयां डेरा कदे ना लाईआ। उहदा लेखा नहीं वजूद तत्त तनी, अप तेज वाए पृथ्मी अकाश ना वेस वटाईआ। उह सुणी जाए कदे ना कन्नी, सरवणां चले ना कोई चतुराईआ। उह जगत माया वाली नहीं कोई धनी, धनाढ रूप ना कोई दरसाईआ। शरअ विच्च जाए कदे ना डंनी, मज़हबां संग ना कोई रखाईआ। ना घड़ी जाए ना भन्नी,

दोहां तों बाहर आपणा रूप दरसाईआ। उह बणी नहीं किसे दी वंनी, नार हो के कन्त ना कोई हंढाईआ। किसे दी दुखतर बणी नहीं चन्नी, गोदी गोद ना कोई उठाईआ। उहदी धार नहीं कोई उच्ची लंमी, नीकण नीका नज़र कोई ना आईआ। उह आदि जुगादि जुग चौकड़ी कदे ना होए निकम्मी, निहकर्मण रूप ना कोई अखवाईआ। उह गगन गगनंतर ज़िमीं असमान दे सके ना थम्मी, सहारे दी लोड़ ना कोई रखाईआ। उह हत्थ ना आवे किसे विद्या वाली गल्लीं, बुद्धि नाल चले ना कोई चतुराईआ। उह छल विच्च किसे कोलों जाए ना छली, अछल अछल्ल आपणी खेल खिलाईआ। उहनूं खोजदे गए कोटन कोट पैगम्बर पीर वली, वलीऐहिद ध्यान लगाईआ। उह इशारा दे के गिआ मुहम्मद धार अली, अबूबकर नेत्र नैणां नीर वहाईआ। उहदा सीस कदे किसे रक्खया नहीं तली, तलबां दी वंड ना कोई वंडाईआ। नानक दी इक्क गल्ल जदों आवे ते आवे भगतां दी साची गली, नौ दवारयां दे उत्ते आपणा हुक्म सुणाईआ। जिथ्थे जोत दी धार आपे फुली आपे फली, पत टैहणी वंड ना कोई वंडाईआ। उह गल्ल सतिगुर शब्द दी इक्क प्रेम धार दी कली, कलमयां तों बाहर आपणा रंग चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा पर्दा आप चुकाईआ।

इक गल्ल नानक धार सदा नादन, अनाद अनादी धुंन जणाईआ। ब्रह्म धार सदा ब्रह्मादन, ब्रह्मण्डां वेखे सदा चाईं चाईंआ। जिस दी ख़बर आदि जुगादिन, जुग चौकड़ी मेटण कोई ना पाईआ। उह इक्क गल्ल अवतार पैगम्बर गुरू सदा अराधण, बिन मन मनसा ढोले गाईआ। उह भगतां नाल सदा भगती धार दस्से साधन, सिदक सबूरी आपणा संग जणाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द मार के अवाज़न, सोई सुरती लए उठाईआ। उह वेखो नूर नुराना शाह सुल्ताना शाहो भूप राज राजन, नर निरँकारा नूर अलाहीआ। जिस ने आदि जुगादि साजी साची साजन, साजणहार इक्क अखवाईआ। उस दा भेव इक्को बातन, पर्दा परदिआं विच्चों चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दा संग आप बणाईआ।

साची गल्ल अगम्म अथाह, सतिगुर नानक नाम विच्चों दृढ़ाईआ। जिस दा सतिगुर शब्द सदा मलाह, जुग जुग बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जिस दी अकल बुद्धि दे सके ना कोई सलाह, मश्वरे विच्च कदे ना आईआ। उह हत्थ ना आवे थल अस्गाह, महीअल खोजण चाईं चाईंआ। उस दा मालक इक्को बेपरवाह, जो बेपरवाही विच्च समाईआ। जिस उत्ते सतिगुर दया देवे कमा, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। बिना जगत शास्त्रां तों इक्क गल्ल दए समझा, गल्ल गल्ल विच्चों प्रगटाईआ। जिस गल्ल विच्चों नज़री आवे नूर अलाह, नूर नुराना धुरदरगाहीआ। भेव खुल्लाए पर्दा लाह, उहला रहण कोई ना पाईआ। उह गल्ल कहे वाह वा, वाहिगुरू तेरी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा हरि, सच दा संग आप निभाईआ।

गल्ल कहे मैं नानक धारा, धर्म धर्म जणाईआ। मेरा लहणा देणा विच्च संसारा, संसारी भण्डारी सँघारी समझ ना पाईआ। मेरा नाता नाल निरगुण जोत जोत निरँकारा, निरगुण मेला सहज सुभाईआ। जिस दी शब्द अवाज़ बिन रसना जिह्वा ते राग सुणाए बिन तन्द सितारा, आप आपणा नाद दृढ़ाईआ। उस दा खेल अपर अपारा, अलक्ख अगोचर इक्क

अखवाईआ। जिस दा अन्त ना पारावारा, बेअन्त कह के सारे सीस निवाईआ। धुर दे शब्द दी धुर दी सिख्या जिस दा अक्खरां नाल नहीं तकरारा, झगढ़ा दीन दुनी ना कोई जणाईआ। उस गल्ल दा मालक इक्को एकँकारा, जो जुग जुग जन भगतां दए समझाईआ। काया मन्दर अंदर खोल के बन्द किवाड़ा, त्रैगुण अतीता पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ। नानक धार इक्क गल्ल सुणी सन्त कुमार, ब्राह सुण के खुशी बणाईआ। यगै पुरुष होया ख़बरदार, हावगरीब गा गा ढोले गाईआ। नर नरायण बिन रसना दए उच्चार, कपलमुन कह कह आपणा रंग रंगाईआ। पिरथू प्रिथम गल्ल सुण के अपर अपार, मतसय मिल के खुशी बणाईआ। कछप ने पाई इक्क गल्ल दी सार, समुंद सागर रिड़के चाईं चाईंआ। धनंतर सुण के अपर अपार, खेल खिलाया खलक खुदाईआ। बावन हो के आप हुशिआर, ... प्रहिलाद इक्क गल्ल दिती समझाईआ। हरी हरि खेल कीता अपार, धरू दा पर्दा अंदरे अंदर उठाईआ। गज दा लहणा देणा दित्ता उतार, तन्दवे तन्द तन्द कटाईआ। राम हनूवन्त इक्को गल्ल ते कर विचार, गलवकड़ी लई पाईआ। इक्क गल्ल दा खेल अपार, वेद व्यासा सुण सुण खुशी बणाईआ। कृष्न इक्क गल्ल अरजन दिती प्रेम नाल आधार, उदर दा लेखा दित्ता मुकाईआ। चार जुग दे सासतर इक्क गल्ल उत्ते करन इज़हार, सिफ्तां वाले ढोले गाईआ। सतिगुर नानक दी इक्क गल्ल जिस गल्ल विच्च मिल जाए इक्क एकँकार, इक्क इकल्ला मिले धुर दा माहीआ। दूजी लोड़ रहे ना विच्च संसार, सतिगुर शब्द जिस दी दए गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दी करनी कार कमाईआ।

इक गल्ल सतिगुर नानक दी अञ्जण सुणी नाल प्यार, प्रीती विच्च समाईआ। अमरदास पाई सार, बिन सरवणां वज्जी वधाईआ। रामदास कीता ख़बरदार, राम रामा पर्दा आप उठाईआ। सतिगुर अरजन इक्क गल्ल दा बण के लेख लिखवार, गुरू ग्रंथ गुरदेव दित्ता बणाईआ। गुरू हरि गोबिन्द इक्क गल्ल सुण के हो त्यार, शस्त्र आपणे तन पहनाईआ। हरिराए गल्ल सुणी बिन रसना जिह्वा अन्तर आई धुनकार, जगत नादां बाहर वज्जी वधाईआ। हरिकृष्न सुण के अगम्मी गल्ल छड्ड गिआ संसार, बाल अवसथा इक्को गल्ल विच्च समाईआ। जिस गल्ल नाल गुर तेग बहादर आपणा सीस दित्ता वार, जगदीश नाल मिल के वज्जी वधाईआ। इक्क गल्ल दा गोबिन्द बणया पहरेदार, खण्डा आपणे हत्थ उठाईआ। इक्क गल्ल पिच्छे धर्म दी रखिआ कीती बण आप करतार, कुदरत दा कादर हो के वेख वखाईआ। इक्क गल्ल दा भेव खुल्ह़ाया आपणे पंज प्यार, प्रेम प्रेम विच्चों जणाईआ। इक्क गल्ल सुण के पुरख अकाल, पन्थ खालसा दित्ता रचाईआ। सतिगुर दी इक्क गल्ल जे कोई मन्ने ना उह डुबे विच्च संसार, चुरासी विच्च कदे ना आईआ। उह इक्क गल्ल एह सदा सदा उस प्रभू नूं करो निमस्कार, डण्डावत विच्च ओसे नूं सीस निवाईआ। जिस दे जुग चौकड़ी अनेक अनन्त अगणत नाम कलम शाही कागज़ां नाल लिखे बण लिखवार, कातब हो के कलम दिती चलाईआ। उस इक्क नाम तों आदि जुगादि जुग चौकड़ी कोई नहीं बाहर, जिस गल्ल विच्चों दो जहान सतिगुर नानक धार दित्ते प्रगटाईआ। सो इक्क गल्ल सिखां दे हिरदे अंदर गुर गोबिन्द रक्ख के गिआ आप नाल प्यार, बंस सरबंस दीन दुनी विच्च जगत भेट

कराईआ। अकसर अखीर कलिजुग दी धार विच्च उस गल्ल नूं मन्नेगा सर्ब संसार, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ओसे गल्ल दी कीमत पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्मादि जुग चौकड़ी खेल शब्द शब्द दी धार, सति सति दा सति आपणा खेल खिलाईआ। (२६ कत्तक शहनशाही सम्मत ११)

इक इकल्ला : आदि जुगादी इक्क इकल्ला, एकँकार वड्डी वडयाईआ । वसणहारा सचखण्ड सच महल्ला, महिफ़ल आपणे नाम लगाईआ। सरगुण फड़ाए नाम पल्ला, पल्लू आपणी गंढ पवाईआ। जोती दीपक आपे बला, शब्द नाद शनवाईआ। सच संदेश आप घल्ला, श्री भगवान करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे नूरी अल्ला, इल्लाही नूर आप अखवाईआ। आपणी धार रक्खे बिसमिल्ला, बिस्मिल आपणा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वेस वटाईआ।

इक इकल्ला वेस वटा, निरगुण सरगुण धार चलाइंदा। लक्ख चुरासी घाड़न लए घड़ा, घट घट आपणा नूर धराइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म वंड वंडा, काया बंक आप सुहाइंदा। आत्म परमात्म खेल खला, निरगुण निरगुण वेख वखाइंदा। ईश जीव हरि गंढ पवा, जगदीस आपणी धार बंधाइंदा। धरत धवल डेरा ला, धरनी आपणा भेव खुल्ह़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला आपणी कार कमाइंदा। इक्क इकल्ला आदि जुगादि, जुग चौकड़ी खेल कराईआ। इक्क इकल्ला वजाए नाद, नाम नगारा इक्क सुणाईआ। इक्क इकल्ला वसे ब्रह्माद, ब्रह्मांड करे कुड़माईआ। इक्क इकल्ला वरते सांग, भगवन आपणा सांग रचाईआ। इक्क इकल्ला लक्ख चुरासी रक्खे तांघ, घर साचे डेरा लाईआ। इक्क इकल्ला आत्म परमात्म मंगे मांग, अन्तर इक्क ध्यान रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप समझाईआ।

इक इकल्ला एको नाम, नर हरि नरायण आप प्रगटाइंदा। इक्क इकल्ला एका जाम, अमृत आत्म रस चखाइंदा। इक्क इकल्ला एको राम, हरि घट अंदर नज़री आइंदा। इक्क इकल्ला इक्को शाम, जोती जाता डगमगाइंदा। इक्क इकल्ला देवे पैग़ाम, नाम संदेसा इक्क सुणाइंदा। इक्क इकल्ला वखाए निशान, धर्म निशाना इक्क झुलाइंदा। इक्क इकल्ला श्री भगवान, जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा । इक्क इकल्ला वसे सच मकान, साचे मन्दर डेरा लाइंदा। इक्क इकल्ला सुहाए भूमका असथान, थान थनंतर सोभा पाइंदा। इक्क इकल्ला होवे जाणी जाण, जानणहारा आप अखवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी खेल कराइंदा।

इक इकल्ला खेल अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाईआ। इक्क इकल्ला ना मरे ना पए जम्म, मात गरभ ना फेरा पाईआ। इक्क इकल्ला पवण स्वास ना कोई दम, रसना जिह्वा ना कोई हिलाईआ। इक्क इकल्ला नेत्र रोवे ना छंम छंम, हरख सोग ना कोई रखवाईआ। इक्क इकल्ला ना घड़े ना देवे कोई भन्न, घड़न भन्नणहार आप हो जाईआ। इक्क इकल्ला ना कोई जननी ना कोई जन, मात पित ना कोई अखवाईआ। इक्क इकल्ला ना कोई राग ना कोई कन्न, तार सतार ना कोई सुणाईआ। इक्क इकल्ला ना कोई वस्त ना कोई

धन्न, ख़ज़ाना हत्थ ना कोई वखाईआ। इक्क इकल्ला ना कोई छप्पर ना कोई छन्न, चार दीवार ना कोई बणाईआ। इक्क इकल्ला ना कोई देवे डंन, डंका इक्को इक्क वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवन, इक्क इकल्ला बेपरवाहीआ। इक इकल्ला सो पुरख निरञ्जण, साहिब सतिगुर वड वडयाईआ। इक्क इकल्ला दर्द दुख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। इक्क इकल्ला नेत्र नाम निधान पाए अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। इक्क इकल्ला दो जहानां साचा सज्जण, सगला संग निभाईआ। इक्क इकल्ला सच दुआर कराए धूढ़ी मज़न, मस्तक टिक्का इक्को लाईआ। इक्क इकल्ला इक्को दस्से सच्चा भजन, बन्दगी इक्को इक्क समझाईआ। इक्क इकल्ला होवे पड़दे कज्जण, समरथ सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। इक्क इकल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लक्ख चुरासी वेख वखाईआ।

इक इकल्ला साचा मीत, हरि मित्र प्यारा इक्क अखवाइंदा। इक्क इकल्ला लक्ख चुरासी परखे नीत, घर घर आपणा डेरा लाइंदा। इक्क इकल्ला सतिजुग तेंता द्वापर कलिजुग जुग चौकड़ी चलाए आपणी रीत, साचा मार्ग लोकमात वखाइंदा। इक्क इकल्ला बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच्च कदे ना आइंदा। इक्क इकल्ला लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच आपणी गंढ पवाइंदा। इक्क इकल्ला दो जहानां लए जीत, लशकर फ़ौज ना कोई रखाइंदा। इक्क इकल्ला दस्से सच प्रीत, प्रीती इक्को इक्क दरसाइंदा। इक्क इकल्ला , जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा।

इक इकल्ला लक्ख चुरासी पसार, निरगुण सरगुण दए वडयाईआ । इक्क इकल्ला गुर अवतार, पंज तत्त करे कुड़माईआ। इक्क इकल्ला शब्द नाम जैकार, जै जैकार इक्क सुणाईआ। इक्क इकल्ला जोत नूर उजिआर, नूरो नूर करे रुशनाईआ। इक्क इकल्ला सूरज चंद दए आधार, मण्डल मंडप आप वडयाईआ। इक्क इकल्ला लोआं पुरीआं वेखे अखाड़, ब्रह्मण्डां खण्डां आपणा नाच नचाईआ। इक्क इकल्ला विष्नूं देवणहार भंडार, वस्त अमोलक झोली पाईआ। इक्क इकल्ला ब्रह्मा कर पसार, ब्रह्मवेता खेल खलाईआ। इक्क इकल्ला शंकर त्रिसूल कर प्यार, साचा नाता जोड़ जुड़ाईआ। इक्क इकल्ला त्रैगुण कर वरतार, बंधन बंधन विच्च बंधाईआ। इक्क इकल्ला पंज तत्त खेल अपार, पारब्रह्म प्रभ आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ।

इक इकल्ला जुग चौकड़ी चार, चारे वेदां धार चलाइंदा। इक्क इकल्ला निरगुण सरगुण लै अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर आप हंडाइंदा। इक्क इकल्ला बोध अगाध बोल जैकार, निशअक्खर अक्खर रूप वटाइंदा। इक्क इकल्ला शास्त्र सिमरत करे उजिआर, भेव अभेदा भेव खुल्ह़ाइंदा। इक्क इकल्ला खोल्ह़णहारा बन्द कवाड़, अन्तर आत्म पड़दा लाहिंदा। इक्क इकल्ला अमृत देवे ठंडा ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। इक्क इकल्ला साचे मन्दर हो त्यार, महल्ल अट्टल इक्क रुशनाइंदा। इक्क इकल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कमाइंदा। इक्क इकल्ला राम रमया, नय्या आपणे नाम चलाईआ। इक्क इकल्ला शाम घनय्या, बंसरी इक्को सच वजाईआ। इक्क इकल्ला साचा सय्या, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। इक्क इकल्ला नूर इल्लाहीआ, नूरो नूर रुशनाईआ। इक्क इकल्ला निरगुण जोत जगया, नानक गोबिन्द धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ । इक्क इकल्ला गीता ज्ञान, अठ्ठ दस मेल मिलाइंदा। इक्क इकल्ला सच पुरान, अठ्ठ दस जोड़ जुड़ाइंदा। इक्क इकल्ला हो प्रधान, अठ्ठ तत्त वेख वखाइंदा। इक्क इकल्ला नौजवान, दसम दवारी सोभा पाइंदा। इक्क इकल्ला अठ्ठ दस करे कल्याण, निहकर्मी आपणा कर्म कमाइंदा। इक्क इकल्ला जुग चौकड़ी मेटे आण, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। इक्क इकल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नूर ज़हूर इक्क जणाइंदा।

इक इकल्ला तेई अवतार, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। इक्क इकल्ला हरि निरँकार, भगत अठारां जोत करे रुशनाईआ। इक्क इकल्ला ईसा मूसा दे आधार, मुहम्मद आपणा घर बुझाईआ। इक्क इकल्ला नानक गोबिन्द कर प्यार, सच प्रीती इक्क समझाईआ। इक्क इकल्ला नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जुग लहणा देणा कज़ दए उतार, मकरूज नज़र कोई ना आईआ। इक्क इकल्ला दो जहानां बण सिकदार, साचा हुक्म इक्क मनाईआ। इक्क इकल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

इक इकल्ला आए जुग, जुग करता वड वडयाईआ। इक्क इकल्ला भगत सुहेले लए चुग, लक्ख चुरासी फोल फुलाईआ। इक्क इकल्ला साचे सन्तां मेटे दुःख, दुःख दर्द ना लागे राईआ। इक्क इकल्ला गुरमुखां देवे सुख, मुख उजल मात वखाईआ । इक्क इकल्ला गुरसिखां सफल कराए कुक्ख, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। इक्क इकल्ला ग़रीब निमाणयां गोदी लए चुक्क, चुक्क चुक्क आपणी खुशी मनाईआ । इक्क इकल्ला नाता तोड़े मात गरभ रुख, दस दस मास ना अगन तपाईआ। इक्क इकल्ला निर्मल जोत करे प्रकाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक्क उठाईआ।

इक इकल्ला सच स्वामी, ठाकर इक्को नज़री आइंदा। इक्क इकल्ला अन्तरजामी, घट घट अंदर वेख वखाइंदा। इक्क इकल्ला सदा निहकामी, निहचल धाम आसण लाइंदा। इक्क इकल्ला जुग जुग सुणाए आपणी बाणी, बाण निराला तीर लगाइंदा। इक्क इकल्ला वेखणहारा चार खाणी, अंडज जेरज उत्भुज सेतज फोल फुलाइंदा। इक्क इकल्ला सुरत सवाणी मिलावे शब्द हाणी, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। इक्क इकल्ला आवण जावण चुकाए काणी, राए धर्म नेड़ ना आइंदा। इक्क इकल्ला देवे पद निरबाणी, अमरापद इक्क वखाइंदा। इक्क इकल्ला सुणाए राम कहाणी, रमय्या आपणा राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला खेल खलाइंदा।

इक इकल्ला खेल अव्वला, आदि पुरख आप कराईआ। इक्क इकल्ला जन भगत फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ । इक्क इकल्ला सच सिँघासण साचा मल्ला, सोभावन्त घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ।

इक इकल्ला सद आदेस, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। इक्क इकल्ला नर नरेश, नर निरँकार हरि अखवाइंदा। इक्क इकल्ला बण दरवेस, दर दर घर घर अलख जगाइंदा। इक्क इकल्ला मुच्छ दाड़ी ना कोई केस, नर हरि मूंड ना कोई मुंडाइंदा। इक्क इकल्ला जन भगतां करे साचा हेत, नित नवित्त आपणा फेरा पाइंदा। इक्क इकल्ला अंदर वड़ के दस्से आपणा भेत, बाहरों नज़र किसे ना आइंदा। इक्क इकल्ला साचे सन्तां नाल रिहा

खेड, बण खलारी खेड खडाइंदा। इक्क इकल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप समझाइंदा।

इक इकल्ला बोध अगाध, अलक्ख अगोचर वड वडयाईआ। इक्क इकल्ला सदा सद देवणहारा दाद, ददी दर्दीआं दर्द वंडाईआ । जिस रचना रची आदि, सो जुग जुग वेखे बेपरवाहीआ। इक्क इकल्ला नाम निधान वजाए नाद, दो जहानां दए सुणाईआ। इक्क इकल्ला कलिजुग अन्त साचा साजण लए साज, वड सज्जण फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वखाए सच समाज, समग्री इक्को इक्क जणाईआ।

इक इकल्ला इक्को ज़ात, अजाति रूप ना कोई वखाइंदा। इक्क इकल्ला कमलापात, कँवल नैण इक्को इक्क अखवाइंदा। इक्क इकल्ला खोल्हे ताक, बन्द कवाड़ी कुण्डा लाहिंदा। इक्क इकल्ला बणे साक, सज्जण सुहेले नाल मिलाइंदा। इक्क इकल्ला पाकी पाक, पत्तत्त पुनीत इक्क अखवाइंदा। इक्क इकल्ला चढ़े साचे राक, घोड़ा इक्को इक्क दौड़ाइंदा। इक्क इकल्ला वेखे ख़ाकी ख़ाक, ख़ाकसार इक्क अखवाइंदा । इक्क इकल्ला लक्ख चुरासी देवे अन्त तलाक, बिन भगतां पल्लू ना किसे फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर हरि साची खेल कराइंदा।

इक इकल्ला डूंघा सागर, हाथ कोई ना आईआ। इक्क इकल्ला करीम कादर, करता इक्को बेपरवाहीआ। इक्क इकल्ला निरगुण नूर करे उजागर, ज़हूर इक्को इक्क रुशनाईआ। इक्क इकल्ला सबर सबूरी देवे साबर, सिदक इक्को इक्क समझाईआ। इक्क इकल्ला जुग चौकड़ी जन भगतां देवे आदर, आदरश आपणा इक्क वखाईआ। इक्क इकल्ला वेखणहारा काया गागर, काची गगरीआ फोल फुलाईआ। इक्क इकल्ला दो जहानां बणे सौदागर, बण वणजारा हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग साचा खेल वखाईआ। इक इकल्ला जुग जुग आए, गुर अवतार नाउँ रखाईआ। इक्क इकल्ला फेरा पाए, पीर पैगम्बर भेव चुकाईआ। इक्क इकल्ला शास्त्र सिमरत वेद पुरान गीता ज्ञान अञ्जील कुरान दृढ़ाए, खाणी बाणी नाल मिलाईआ। इक्क इकल्ला शिवदवाले मद्ध मन्दर उपजाए, इक्क इकल्ला मसीत मसजद डेरा लाईआ। इक्क इकल्ला गुरदुआर डंक वजाए, डंका आपणे नाम सुणाईआ। इक्क इकल्ला राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान जीव जंत सर्ब भुलाए, भरम भुलेखा एको पाईआ। इक्क इकल्ला त्रैगुण माया पड़दा हत्थ रखाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ।

इक इकल्ला पाए पड़दा, नेत्र सके ना कोई खुल्हाईआ। कूड़ कुड़िआरा जुग जुग सड़दा, सीतल धार ना कोई वखाईआ। हरि मन्दर कोई ना वड़दा, मूर्ख मुगध भुल्ला बेपरवाहीआ। कूड़ी क्रिया घाड़न घड़दा, सच मिले ना कोई वडयाईआ। माणस जन्म मात हरदा, हरि जू नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्क इकल्ला वेख वखाईआ।

इक इकल्ला वेखे आप, कलिजुग अन्त दया कमाईआ। इक्क इकल्ला सृष्ट सबाई माई बाप, पिता पूत रूप जणाईआ। इक्क इकल्ला आदि जुगादि वसे साथ, अंदर बाहर संग निभाईआ। इक्क इकल्ला वड रघनाथ, रघपत आपणी सेव कमाईआ। इक्क इकल्ला दासी दास, दासी दास आप हो जाईआ। इक्क इकल्ला जन भगतां पूरी करे आस, निरासा कोई

रहण ना पाईआ। इक्क इकल्ला होए सहाई जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच्च परभास, समुंद सागर डूंघी कंदर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच सरनाईआ।

इक इकल्ला भगतन संग, सगला संग निभाइंदा। कलिजुग अन्त वजाए मरदंग, सच मरदंग नाम सुणाइंदा। जन भगतां अंदर जाए लंघ, औंदा जांदा नज़र ना आइंदा। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भन्नाइंदा। ज़ात पात ना कोई बंधन बंध, शरअ शरीअत वंड ना कोई वंडाइंदा। निरगुण जोत चाढ़ चन्द, जगत अन्धेरा दूर कराइंदा। निज आत्म देवे इक्क अनन्द, परमानंद आप चखाइंदा। कूड़ा नाता तुटे कूड़े गंद, अमृत रस मुख छुहाइंदा। खुशी कराए बन्द बन्द, बन्दीख़ाना कोई रहण ना पाइंदा। लेखा जाणे हँ ब्रह्म, पारब्रह्म प्रभ आपणी गोद सुहाइंदा। जिस दी धारों गिआ जम्म, सो आपणी धार मिलाइंदा। निहकर्मी करे आपणा कम्म, कर्म कांड ना कोई वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां दया कमाइंदा।

इक इकल्ला भगत हुदार, भगवन आपणी दया कमाईआ। कलिजुग अन्त लै अवतार, कल कलकी फेरा पाईआ। वेद व्यासा बण लिखार, सच खुलासा गिआ समझाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा होए उजिआर, उच्चे टिल्ले परबत डेरा लाईआ। जगत नेत्र नज़र ना आए विच्च संसार, भरमे भुल्ले सर्ब लोकाईआ। जन भगतां सज्जणां लए उठाल, पतिपरमेश्वर इक्को इक्क अखवाईआ। निरगुण सरगुण बणे दलाल, बेपरवाह फेरा पाईआ। हक़ हकीकत दए वखाल, लाशरीक नूर इल्लाहीआ। जन्म जन्म दा मुशकल हल्ल करे सवाल, मार्ग इक्को इक्क वखाईआ। इक्को नाता शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोई वखाईआ। चार वरन करे प्यार, छतरी ब्राह्मण शूद्र वैश दए वडयाईआ। अठारां बरन ना होण खुआर, जगत खुआरी दए मिटाईआ। साचा नाता जोड़ विच्च संसार, पुरख बिधाता दए समझाईआ। सर्ब जहान दा इक्क निरँकार, दूजा नज़र कोई ना आईआ। आत्म परमात्म करो विचार, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। ब्रह्म बणया आप करतार, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। गीता ज्ञान पाओ सार, निज नेत्र नैण खुल्ह़ाईआ। नौं अठारां मारो मार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर इक्को इक्क जणाईआ। (२८ जेठ २०२० बि)

इक्की : सरगुण धार निरगुण दूआ एका होवे इक्की, एकँकार मिल के वजे वधाईआ। (३१ भादरों श सं ८)

पुरख अकाल किहा सरगुण धार निरगुण दूआ एका बण के होवे इक्की, इक्को वार जणाईआ। (१७ जेठ श सं ६)

चोला कहे प्रभू मेरा अन्त अखीरी होया विहार, तेरे चरन मिली सरनाईआ। मैं चौहन्दा इकी भगत जन कर त्यार, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। उह अंदरों होण संगत दे सेवादार, दवैत वाला नज़र कोई ना आईआ। ओन्हां दे सीस बंन्ह दस्तार, एह इक्की देण गवाहीआ। आप बण यारां दा यार, यराना तोड़ निभाईआ। पैहलों माझे विच्चों कर विचार, फौजा सिँघ मलूवालों लैणा उठाईआ। फेर मंगल सिँघ होवे हुशिआर, सारंगढ़े वाला संग बणाईआ। नरैण सिँघ कर ख़बरदार, पुर गुमान वज्जे वधाईआ। मोता सिँघ दे उधार, सिर आपणा

हत्थ टिकाईआ। कुंदन सिँघ बख्श प्यार, मालचक जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ।

चोला कहे मालवे कर ध्यान, मेहर नज़र उठाईआ। जरनैल सिँघ कर परवान, राम सिँघ नाल मिलाईआ। साधू सिँघ दे ज्ञान, सिर आपणा हत्थ रखाईआ। जागीर सिँघ होवे बलवान, हरबंस सिँघ मिल के वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ।

चोला कहे दुआबे वेख आपणा रूप, दोहरी धार समझाईआ। तारू सिँघ बणा सपूत, अरजन सिँघ संग वखाईआ। लाल सिँघ बणा सूच, हेरां पिण्ड देणी वडयाईआ। प्रीतम सिँघ भाग लगा पंज भूत, प्रीतम सिँघ जंडिआले वाला नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा पूर कराईआ।

चोला कहे जम्मू चाढ़ दे रंग, आपणी दया कमाईआ। तेज भान दे अनन्द, लछमण सिँघ मिल के वज्जे वधाईआ। अंग्रेज़ सिँघ चमका चन्द, देवी सिँघ होवे रुशनाईआ। गुरदित सिँघ तेरे नाम दा होए पाबन्द, सिर पंजां हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा धुर दा वर, सद आपणा रंग रंगाईआ। चोला कहे मेरा रूप चन्दोआ, बिन चन्दन वास महकाईआ। तेरे जोगा होया, दूजा नज़र कोई ना पाईआ। मैं जगत जहान मोआ, गुरमुख आपणे लैणे प्रगटाईआ। प्रकाश होवे त्रै लोआ, पुरीआं लोआं वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी कार कमाईआ। चन्दोआ कहे मेरे साहिब सतिगुर महाराज, शहनशाह तेरी सरनाईआ। इक्कीवीं दस्तार अमरजीत सिँघ दे सिर ते रक्ख दे ताज, तख़त निवासी दया कमाईआ। तेरा सतिजुग दा बणे समाज, समग्री इक्क वरताईआ। जेहड़ा झगढ़ा पए कोई ना बाद, बाद दा लेखा देणा गवाईआ। मंगूपूरों जो आई सुगात, मनजीत भज्जी चाईं चाईंआ। एह शब्द गुरू वजाए नाद, संदेशा आया सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दा रंग इक्क वखाईआ।

चन्दोआ कहे इक्की गुरमुखो सतिगुर बणन दी रक्खणी कदे नहीं आस, भगवन रूप ना कोई बणाईआ। इक्को शब्द गुरदेव सभ दे वसे पास, मालक हर घट थाईंआ। पूरन विच्च पूरन जोत प्रकाश, बिना पूरन तों दूजा नज़र कोई ना आईआ। कन्नां विच्च सुणिओ ना किसे दी बात, झगढ़े विच्च कूड़ लोकाईआ। मेरा ठग्गाँ चोरां नाल साथ, बदमाशां विच्च वड़ के झट्ट लंघाईआ। काहनां गोपीआं अंदर वड़ के पावां रास, एह मेरी बेपरवाहीआ। निमाज़ीआं विच्च बह के पढ़ां निमाज़, सजदा सीस झुकाईआ। शाह सुल्तानां विच्च सीस ते रक्खां ताज, शाह पातशाह हो के आपणा हुक्म सुणाईआ। जद चाहोगे दिन रात मारां आ आवाज़, हुक्म हुक्म विच्चों प्रगटाईआ। पिच्छेजे सुत्ते रहे ते हुण पैणा जाग, आलस निंदरा लैणी गवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा खेल वखाईआ। (१८ हाढ़ श सं ६)

इक्की इक्की प्रवारां दा विहार : १ चेत २०१४ बि तों २१ दिन २१-२१ प्रवार इक्ठे होए ते सभ दा सांझा लंगर चल्लया (ग्रन्थ नं ६)

इक रुपइआ ते दस्तार दुपट्टे दे विहार :

पुरख अकाल किरपा करे अपार, जन भगतां दए वडयाईआ। सम्मत शहनशाही सत पावे सार, सति सरूप होए सहाईआ। चार जुग दा पिछला कज़ा उतार, अग्गे झोली दए भराईआ। चार कुण्ट दह दिशा वेख विचार, गृह गृह खोज खुजाईआ। गुरमुखां सीस बंधे आप दस्तार, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र टिकाईआ। कुनबे विच्चों माण बख्श इक्क सच्ची सरकार, सच दा मार्ग दए वखाईआ। घर घर विच्च ज़रूर करे एह विहार, आवे जावे चाईं चाईंआ। हुक्म संदेशा दे सच्ची सरकार, सतिजुग मरयादा दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुर दा हरि, दर आपणा इक्क खुल्ह़ाईआ।

पुरख अकाल सति धर्म चलौणी नईआ, बेड़ा जगत वखाईआ। जन भगतां घर जा जा दस्तार नाल देवे इक्क इक्क रुपईआ, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। अग्गे धर्म राए कद्ठे कदे ना वहीआ, लेखा मंगे कोई ना राईआ। साहिब सतिगुर बण के सईआ, सज्जण हो के वेख वखाईआ। नौ गुरसिख सदा संग रखवईआ, सम्मत सत्त चलणा चाईं चाईंआ। नाले लेखा दस्सणा गोबिन्द दा केहड़ा ढईआ, किस बिध लेखा पूर कराईआ। नाल फोटो रक्खणी अष्टभुज दुर्गा मईआ, सदा प्रभ सिँघासण हेठ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां घर भट्ट बण के बणे गवईआ, सिफ्त गुरमुखां वाली जणाईआ। (१७ मध्घर श सं ६)

इष्ट : पुरख अकाल सभ ने लैणा मना, दूजा इष्ट ना कोई मनाईआ। सृष्ट सबाई होए फनाह, मलक उल मौत फेरा पाईआ । बिन हरि बख्शे ना कोई गुनाह, ज़मानत देण कोई ना पाईआ। (१७ हाढ़ २०१८ बि)

नाम कहे मेरा मार्ग एक, आदि जुगादि दिआं समझाईआ। श्री भगवान रक्खणी टेक, धुर दा इष्ट नूर खुदाईआ। (२१ जेठ २०२१ बि)

महाराज शेर सिँघ सच्चा इष्ट, जुग चार आपणा तेज वखाए। (२६ फग्गण २००७ बि)

शब्द इष्ट गुरदेव, मस्तक चरन धूढ़। पारब्रह्म ब्रह्म साची सेव, लेखे लावे मूर्ख मूड़। अमृत आत्म रस साची जिहव, जीव जगत रस नाता कूड़। (२० हाढ़ २०१३ बि) (पूजण योग)

इसनान : तेरे प्यार विच्च जगत इशनान कर के आई किसे ना सोझी, साची समझ ना कोई समझाईआ। (१ माघ श सं ८)

पुरख अकाल कहे माघ जो प्रभ दा दर्शन पाउणगे, सच दवार सुहाईआ। उह चरन धूढ़ी इक्को नहाउणगे, दूसर इशनान ना कोई वडयाईआ। अंदर बाहर दुरमत मैल धवाउणगे, सतिगुर करे आप सफ़ाईआ। (१ माघ श सं ८)

इशनान तक्कणा धर्म धार मज़न का, तीर्थ तट्ट ना कोई नुहाईआ। (२ पोह श सं ८)

जन भगतां दे नाम धन माल, अमुल्ल अतुल आप वरताईआ। आत्म अन्तर अमृत सरोवर भर ताल, इशनान इक्को वार कराईआ। (१४ फग्गण श सं ८)
अठ्ठ सट्ठ कहण जन भगतो प्रभ चरन सच्चा इशनाना, जन्म जन्म दी मैल धवाईआ । किरपा करे श्री भगवाना, सिर सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। (१ माघ श सं ६)
इशनान बख्श दे आपणे सरोवर सर दे, जगत तीर्थां लोड़ रहे ना राईआ। दर्शन दे दे नरायण नर दे, नर हरि आपणा पर्दा लाहीआ। (२० जेठ श सं १०)

इशक : जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती देवे इशक, आशक माशूक इक्को रंग रंगाईआ। (८ सावण २०२१ बि)
सच प्रीती दे के इशक, मुशकल पिछली हल कराईआ। (२० सावण २०२१ बि)

पुरख अकाल किहा मैनूं भगतां मिलण दा इशक, जेहड़ा इशक आशक माअशूक दोवें ना सकण कोई कमाईआ। (२५ पोह २०२१ बि)
भगत भगवान इक्क दूजे दे बणा के वैरागी, वैराग विच्च आपणा नीर वहाईआ। एह इशक ना हकीकी ना मजाजी, दोहां तों बाहर आपणी खेल खिलाईआ। (२५ मध्घर श सं ६)

इसम : हुक्मी हुक्म धुर फ़रमाण, एका इसम आप समझाईआ। (३ जेठ २०१७ बि) इक्को इक्क वाहिद करदे इसम, इसम आज़म तेरा नज़री आईआ। (२६ हाढ़ श सं ८)

इन्द : सति धर्म दी धार विच्च रिहा ना कोई देवत सुरा, सुरपत राजा इन्द रिहा जणाईआ। (२२ भादरों श सं ६)
जिस दे हुक्मे अंदर करोड़ तेतीसा सुरपत राजा इन्द, विष्न ब्रह्मा शिव आपणी कार कमाइंदा। (२३ चेत २०२१ बि)

एका एक : सोलां भादरों कहे धुर दा शब्द अगम्मा ढोल, हरि कलमा एका एक दित्ता वजाईआ। (१६ भादरों श सं १) चारे कुण्ट हुक्म संदेशा देवां आण, एका एक जणाईआ। (१६ माघ श सं ८) (अचानक, इक्क तों इक्क निराला)

ईड़ा : नौं दवारे पार कराउणा, सुखमन टेडी बंक अद्धविचकार ना कोई रखवाईआ। ईड़ा पिंगल फड़ दबाउणा, पंजे विकार सके ना सिर उठाईआ। (१६ जेठ २०१८ बि)
नाता तोड़ नौं दवार, बजर कपाटी कुण्डा लाहिंदा। सुखमन टेडी करे पार, ईड़ा पिंगल मूंह दे भार सुटाइंदा। (१६ अस्सू २०१६ बि) आत्म परमात्म धुर दा मार्ग देवे दस्स, ईड़ा पिंगल सुखमन अद्ध विचकार ना कोई अटकाइंदा। (१६ मध्घर २०१२१ बि)

ईस : आत्म खुल्ले दसम दवार, ईश जीव भेत मिट जाई। (६ जेठ २००८ बि) सोहँ

नाम तेरी वड्डिआई। ईश जीव इक्क हो जाई। (१ माघ २००६ बि)

रूह कहे मैं निरगुण जोत नुरानी, जहूर प्रभ दा नज़री आईआ। मेरी तत्तां वाली जूह बेगानी, नित्त नवित्त आपणा खेल खलाईआ। मैनूं ईश जीव आत्मा कहो ब्रह्म कहो भावें कहो स्वासां वाला प्राणी, तत्तां अंदर आपणा डेरा लाईआ। जे मैं ना होवां शरीर दी रहे ना कोई निशानी, जगत निशाना ना कोई वखाईआ। (१५ माघ श सं ६)

जीव कहे मैं तेरा नात, नाता सच्चा जोड़ जुड़ाईआ। ईश कहे मैं तेरा बाप, पिता पुरख अखवाईआ। (७ पोह २०२० बि करतार)

ईन : रसना बोलण सारे मिल के सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जैकारा, जै जैकार इक्क सुणाइंदा। अग्गे करे फेर विहारा, पैहलां आपणी ईन मनाइंदा। (२१ जेठ २०१६ बि)

पगढ़ी कहे मैनूं बाहमण बावन आया बंनु के, वेस गरीबां वाला वटाईआ। इक्क ईन आया मन्न के, हुक्म धुरदरगाहीआ। (५ चेत श सं ४) (कायदा कानूंन)

* * * * *